गोचाली

२०४८

"गोचाली"

अङ्क- ७ वर्ष- २१

विशेष आकर्षण:-

कमरेड नेत्रलाल पौडेल "अभागी" को

जीवनी सहित

२०४८

"गोचाली परिवार" (नेपाल)

व्यवस्थापन तथा सम्पादनः-

"गोचाली परिवार" (नेपाल)

प्रकाशकः-

थारु भाषा तथा साहित्य सुधार समिति
पश्चिमाञ्चल नेपाल

मुद्रकः-

प्रतिभा प्रेस
दाङ घोराही
फोन नं. ६००८४

सहयोग रु.१०/-

सम्पादकः-

सगुनलाल चौधरी
जग्गु प्रसाद चौधरी
सुखीराम चौधरी
मङ्गल प्रसाद चौधरी
डम्मर चौधरी

सल्लाहकारः-

महेश चौधरी
अशोक कुमार चौधरी
भगवती चौधरी
लीला गंभीर
टेक बहादुर चौधरी

विशेष सहयोगीः-

गुरु प्रसाद चौधरी
कृष्ण प्रसाद चौधरी
कृष्ण प्रसाद थारू
लाल बहादुर चौधरी
बल बहादुर चौधरी

विषय-सूची

का	कयाकर	कहां
सम्पादकीय व प्रकाशकीय		५
सत्यके मार्ग म लागी	–भीम वहादुर गोचाली	७
बतकोही (माघे व मने)	–लक्षमण गोचाली	९
प्रिय गोचालीहन म्वार बधाई	–जे० पी० चौधरी	१४
युवा जोश (कविता)	–रमण चौधरी	१६
विहानके अजरारमे नजर ―	–विजय गोचाली	१७
आग वढी गोचाली (कविता)	–के० पी० चौधरी	१९
आंखक किर कीट	–एक गोचाली	२०
मैना	–कौनो गोचाली	२१
जनवादी चिन्तन	–निम प्रसाद चौधरी	२२
शहिद	–जे० पीं० गोची	२५
अनुरोध	–नरेश गोचाली	२६
स्वागत गान	–ललित कुमार	२८
जनौवर कथा (कग्है)	–रुपलाल चौधरी	२८
दुःख स्वयम अपनम ―	–जे० पी० गोची	२९
न लर नै हुई	–टे० वी० गोची	३०
सवालके जवाफ		३१
समाचार		३२
क० नेत्रलाल पौडेल 'अभागी' ― ―		३३
जिन्दगीके डगर (गीत)	–महेश चौधरी	३७
लिह परल अछिन्क अधिकार	–मङ्गल प्रसाद चौधरी	३९
शुभ–कामनाका केही शब्द	–नारायण प्रसाद शर्मा	४०

सम्पादकीय व प्रकाशकीय

"पुरान बात सम्झवेर"

साहित्य व संस्कृति सभ्य समाज के गहना हो । नैना हेर्नी ऐना जसिन समाजह हेर्नी ऐना साहित्य हो । अग्रल समाजके अग्रल साहित्य पछरल समाजके दुवराईल साहित्य कहल. जसिन हम्र थारू जाति पिछरल जाति मध्येके एकथो हुइती । संसारभरके बतहन त छोरदी, हमार देश नेपाल म आर्थिक राजनैतिक, धार्मिक बौद्धिक और जातीय शोषण लम्बा समयसे चलती ऐलक वर्स हम्र थारु जाति फेन जातीय शोषण मे परल वर्स हमार भाषा साहित्य व संस्कृति फेन हमार सँगे शोषणमे पर्नी स्वाभाविक वात हो । हम्र व हमार थारू जाति, भाषाका वास्तवम पाछ रहना चहल हो त ? नाही ! विल्कुल नाही !! याकर कारण त हो पुरान किसिमके सामन्ती प्रथा, जातीय शोषण वक साथ-साथ हमार चेतनाके कमजोरी फेन होख । अस्त–अस्त विचार मनमे सोंचके थारु भाषा तथा साहित्य सुधार समिति पश्चि-ाञ्चल नेपालके गठन ब गोचाली पत्रिकाके प्रकाशन हुईलक हो ।

२०२८ साल बैशाख १ गते जन्मलक गोचाली परिवार उभर-खाभर, कँटाहा, पथराहा डग्रीम पैला नमैंती कबु टुटल झोप्रीम कबु रुखवक छाहीम कबु त उहफेन नै पाके भुंख पीआस रहिके आंधी, बौवा, घाम-जारके वास्ता नैकैके हुइलसे फेन लक्ष्यमा पुग्ना साहस कैक नेगती रहल । वाकर सांसरभर कठिन अवस्था म फेन नै टुटल वर्स आज फेन हम्र भ्यांट करपैल बाटी / उह हमार गोचाली से हमार सौ-भाग्य हो ।

जङ्गली युगसे बदलती आधुनिक युगम पुगल हमार समाज वर्गीय समाज हो । मालिक, कमैया, पुँजीपति मजदूर अथवा कहिकी शोषक व शोषित कना दुई बगाल रहल वात । हमार समाज भितर दुई बगाल मध्ये शोषक हुँक्र

शोषित हुकन आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक लगायत जातीय शोषण से मुक्ति पैनाचाही कना एक पक्ष हो, तर हम्र साम्प्रदायिक भावना जगैना पक्षके नै हुइती । वर्गीय समाजम शोषित, उत्पीडित, किसान, मजदूर पढल-लिखल कलाकार, साहित्यकार, पत्रकार, वकिल, शिक्षक, कर्मचारी, समाजसेवी सब जन हमार "गोचाली" हुईत । चाहे जौन सुक जाति के रहँत कना गोचाली के बिचार हुइतीस । समाजम रहकल तमाम प्रकारके अन्ध विश्वास कुरीति खराब चाल चलनह हटाके प्रगतिशील सभ्य समाजके सृजना कैना एक पक्ष हो कलसे सामन्तवाद, पुँजीवाद, विस्तारवाद, साम्राज्यवाद, सामाजिक साम्राज्यवाद, लगायत तमाम किसिमके प्रतिक्रियावादके विरुद्ध संघर्ष कैक राष्ट्रिय मुक्ति स्वतन्त्रता समानता पैना चाही कना विचारसे "गोचाली" सहमत रलक हो व रहनेफे वा ।

नब्बे प्रतिशत नेपाली हम्र काल कोठरीम रहलक अनुभव कैक आज भुअर विहानके अजरार खाख पाइलवाटी । जत्रा चहकार अजरार चाहल हो वत्रात नै हुईल हो । कुछ कुछ त देखा पर्ना हुइल वात । फटीक अजरार कराइक लाग हम्र गाउके झोप्री झोप्रीम समेत बिजलीके तार जोर्ना जरूरीवाट हमार विश्वास वात अजरार जरुर हुई ।

पत्रिका छपैना वह वेर सजिलो वात हो तर वाकर व्यवस्था मिलैना कठिन वात हो । जे जौन काम करत वाकर दुःख सुख उह जानथ, पाछ जात्रा सफलता पैठा आत्मीय रूपम हर्ष विभोर फेन उह हुइथा । वस्तहँ के हम्र फेन प्रकाशनके लाग आवश्यक प्रवन्ध मिलैना आवश्यक आर्थिक संकलन रचना संकलन कैना सब प्रकारके मिहिनेत कैल वाटी । हम्रहीन आर्थिक सहयोग नैतिक समर्थन, रचना संकलन प्रकाशन कैना सहयोग दिहुइयन सब जहन मुरी मुरी धन्यवाद देना चाहती– स्वीकार कर्वी व अस्त प्रकारके सहयोग करती रहवी कलसे हम्र आपन साहित्यके भकारी धुरखम्भासे उप्पर उठाए हालिसे सेक्ने वाटी । धन्यवाद ।

गोचाली परिवार नेपाल

" सत्यके मार्ग म लागी "

ले. – भीम बहादुर गोचाली
वर्दिया

आज कालक " आधुनिक भौतिकवादी " जमानाम प्रायः ना त मनैनके हृदयके सरलता, शुद्धता हो और ना त आपन बोली-बानीके यथार्थता । यी स्वार्थवादी समयम वास्तविक ' सत्यवादी उदारवादी ' मनै कौनो फे नै हुइत जर्सन लागथ । ठूला-वडा जै जिम्दार जौन फे वाट हुकनके स्वभाव, मानवताके नाता, व्यवहार और सत्यवादी सव नष्ट होगिल वा क्षण भरके मिथ्या भाषण मनैनह फँसाकै आपन स्वार्थ पूरा कर्ना उद्देश्य वाहेक और कुछु नै हो । तव फे हम्र हुकनके मिथ्या भाषणम पनमग्न होक, पाछ लागक आपन जीवनहन दुःखके मार्गम लगैना, समस्या उत्पन्न कराक आपन परिस्थितिहन विगर्ना, आपन जाति धर्म, सभ्यता और संस्कृतिहन गुमैती जैना काम फे हमनके सामने आजिक समयम विद्यमान वा । ज्याकर फलस्वरूप आज हमन मध्ये बहुतसे जनन् आपन कुल जाति धर्मके वारेम फे थाहा नै हो । यी सव हमनके एकता तथा अशिक्षके प्रतिफल और कमजोरी हो । हुइना त अशिक्षित मनैनम फे चेतना रहत, नै रहत कना नै हो । तर ऊ अन्धविश्वासम आधारित रहथ । सत्य व असत्य के बीच तर्क कर सेक्ना क्षमता नै रहथ और ना त ठीक वा वेठीक छुट्टाय सेक्ना खूवी रहथ । उह मारसे स्वार्थवादी असत्यवादी, मिथ्याभाषी और दानव दुस्कर्मी मनै हुकनके लिए प्रियपात्र और सत्यवादी वन्थ ।

हम्र पूर्व कालके इतिहास हेयार वेर उ समयके शिक्षित-अशिक्षित, वालक वृद्ध चाहा जौन कौनो व्यक्ति वस्तु विशेषह सराप व वरदान देहत रलह उ सव सत्य हुइत रहकना हम्र पैथि । काकर की उ समयके मनै सव सत्यवान् रलह और सत्यताके एक सुत्रम वंधल रलह । उह मारसे भगवानके पूज आराधना वा जौन कुछ फे करत रलह उ सब हुकनके सत्यताके फल व परिणाम हुकनके सामने प्रत्यक्ष रूपम प्रतीत हुईत रह । तर आजकालके स्वार्थवादी, भौतिकवादी और द्वन्दवादी दुनियांम हम्र ऊ सव नै सोच्ना व नै चिर्तना च ही/ वडे वडे साहु महाजन, जै जिम्दार अड्डा अदालतके कौनो हाकिम हुइत चाहा साधु महन्त, जोगी फकिर, और भगवानके पण्डित पुजारी हुईत कौनो मफे वास्तविक सत्यता नै हो । आज उह मनै आपन स्वार्थरुपी उद्देश्य लेक विभिन्न ओहदामा वैठके विभिन्न किसिमके खवाल ओढ्क देश और जनतम शोषण करके नङ्गा वनैल वात वनैती जाइत । उह शोषक सामन्ती हुक्क अन्धकाररूपी अ–

न्धविश्वासी जनतनसे सम्मानित-मर्यादित होक आपन स्वार्थ पूरा कर्ना उद्देश्य लेक सर्वसाधारण हन विभिन्न किसिमके लोभ लालच आदि देखा सुनाक अन्धविश्वासके जन्जालम (भुल भुलैयाम) फसाइलबाट । जनतनह मिथ्या भाषणके विभिन्न तौर तरिकासे पिछलग्गु बनाक आपन सुत्रम बाँधके तथा पक्षेम लेक एक्थो शेरके ध्येय लेल बाट और जनतनह कठपुतलो बनाक नचाईतबाट । आपन इज्जतके मतलब नै राखके केवल स्वार्थ पूरा कर्ना ध्येय लेक दुनियाँके साम्ने कु:प्रवृत्ति नाटकके पात्र बनक अभिनय करना और अन्धकाररूपी जनतनके मनोभावनाह अन्ध विश्वासम परिणत कराक भुल भुलैयाम पारक नरकके डगरम लगाक अपन यमराज बनक रगत चुस्ना, हड्डी चबैना काम फे हुकनके यी समयम विद्यमान बा ।

शोषक सामन्तीनके स्वार्थ युक्त दाब-पेच वाला क्षणभरके इमान्दारीता, उपकारीता हुकन बहुत सत्यवादी इमान्दारी तथा कर्मठ व्यक्ति कहलैथ । तर वास्तवम यी सब हुकनके सत्यता इमान्दारीतानै हो नात उपकारीता और उदारताबादी नीति हो । ऊत एक्थो अङ्कुश लगैलक हो । ज्याकर माध्यमसे एक्थो चिल्लर (जुमरा) के रूपम हमार शरीरम प्रवेश होक खुन चुस्ती जैल और कमजोर बनैथ ।

विना मतलबके झुठ बोल्क माकुराके व्यवहार कर्ना जाल बुन्ना हुकनके काल्पनिक आदत और सीप रहथ, उह मारसे हुकनके बानी ब्यहोरा चञ्चल रहथ, बोली मीठ रहथ, ज्याकर स्वाद लेक हम्र बहुत मनमस्ती और मनमग्नम रथी । हुकनके प्रिय सहोदर बनजैबी । उह मिथ्या भाषी दानव दुश्कर्मीहन स्वीकार जैठी, जोकी हमन क्षण भरके आनन्दरूपी छाया देक उह पाछ प्रचन्ड घामम परिणत हुइथ / ज्याकर कारणसे हमन छटपटाईक परथ, तबुफेन हम्र जान नै सेक्थी और कथीकी यी त कौंनो जमानाके पाप के फल पईलक हो तर वास्तवम यी नैहो और असिन नै हुई स्याकथ/ यी त हमार चेतनाके कमजोरी हो, अशिक्षाके कमजोरी हो । ज्याकर फलस्वरुप हम्र राष्ट्रिय समस्यासे फे मुक्त तथा छुटकारा नईपाईस्याक हुइती औंर बिभिन्न किसिमके दु ख और समस्याके हमन घेर्ती जाईता, हमार समाज, हमार गतिविधि, परिस्थिति बिगरती जाईता और हमार संस्कृतिफे लोप हुइती जाईता । पुर्खौं पुर्खासे उह दु:ख भोग्ती आईती / आपन मिहेनत उह दानव दुश्कर्मी शोषक सामन्तीनह लुटैती आइती, हमार गतिबिधि ज्यों का त्यों पलिवा । उह दु:ख समस्या हमन पछेरती और घेरती आईता तब फे हम्र अभिन सम्म बुझ नै सेकल हुँइती ना त हमार

(बाँकी १२ पेजमा)

सम्पादकीय व प्रकाशकीय

"पुरान बात सम्झबेर"

साहित्य व संस्कृति सभ्य समाज के गहना हो । नैना हेर्ना ऐना जसिन समाजह हेर्ना ऐना साहित्य हो । अग्रल समाजके मरल साहित्य पछरल समाजके दुव्राईल साहित्य कहल, जसिन हम्र थारू जाति पिछरल जाति मध्येके एक्थो हुइती । संसारभरके बातहन त छोरदी, हमार देश नेपाल म आर्थिक राजनैतिक, धार्मिक बौद्धिक और जातीय शोषण लम्बा समयसे चलती ऐलक वर्से हम्र थारु जाति फेन जातीय शोषण मे परल वर्से हमार भाषा साहित्य व संस्कृति फेन हमार सँगे शोषणमे पर्ना स्वाभाविक बात हो । हम्र व हमार थारू जाति, भाषाका वास्तवम पाछ रहना चहल हो त ? नाही ! बिल्कुल नाही !! याकर कारण त हो पुरान किसिमके सामन्ती प्रथा, जातीय शोषण वक्र साथ-साथ हमार चेतनाके कमजोरी फेन होख । अस्त-अस्त विचार मनमे सोंचके थारु भाषा तथा साहित्य सुधार समिति पश्चिमाञ्चल नेपालके गठन ब गोचाली पत्रिकाके प्रकाशन हुईलक हो ।

२०२८ साल बैशाख १ गते जन्मलक गोचाली परिवार उभरखाभर, कँटाहा, पथराहा डग्रीम पैला नमैंती कबु टुटल झोप्रीम कबु रुखवक छाहीम कबु त उहफेन नै पाके भुख पीआस रहिके आँधी, बौवा, घाम-जारके वास्ता नैकैके हुइलसे फेन लक्ष्यमा पुग्ना साहस कैक नेगती रहल । वाकर सांसरभर कठिन अवस्था म फेन नै टुटल वर्से आज फेन हम्र भ्यांट करपैल वाटी / उह हमार गोचाली से हमार सौ-भाग्य हो ।

जङ्गली युगसे बदलती आधुनिक युगम पुगल हमार समाज वर्गीय समाज हो । मालिक, कमैया, पुँजीपति मजदूर अथवा कहिकी शोषक व शोषित कना दुई बगाल रहल बात । हमार समाज भितर दुई बगाल मध्ये शोषक हुँक्र

शोषित हुकन आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक लगायत जातीय शोषण से मुक्ति पैंनाचाही कना एक पक्ष हो, तर हम्र साम्प्रदायिक भावना जगैंना पक्षके नै हुइती । वर्गीय समाजम शोषित, उत्पीडित, किसान, मजदूर पढल-लिखल कलाकार, साहित्यकार, पत्रकार, वकिल, शिक्षक, कर्मचारी, समाजसेवी सब जन हमार "गोचाली" हुईत । चाहे जौन सुक जाति के रहँत कना गोचाली के बिचार हुइतीस । समाजम रहकल तमाम प्रकारके अन्ध विश्वास कुरीति खराव चाल चलनह हटाके प्रगतिशील सभ्य समाजके सृजना कैना एक पक्ष हो कलसे सामन्तवाद, पुँजीवाद, विस्तारवाद, साम्राज्यवाद, सामाजिक साम्राज्यवाद, लगायत तमाम किसिमके प्रतिक्रियावादके विरूद्ध संघर्ष कैंक राष्ट्रिय मुक्ति स्वतन्त्रता समानता पैंना चाही कना विचारसे "गोचाली" सहमत रलक हो व रहनेफे वा ।

नब्वे प्रतिशत नेपाली हम्र काल कोठरीम रहलक अनुभव कैंक आज भुअर बिहानके अजरार द्याख पाइलवाटी । जत्रा चहकार अजरार चाहल हो वत्रात नै हुईल हो । कुछ कुछ त देखा पर्ना हुइल वात । फटीक अजरार कराइक लाग हम्र गाउके झोप्री झोप्रीम समेत विजलीके तार जोर्ना जरूरोवाट हमार विश्वास वात अजरार जरुर हुई ।

पत्रिका छपैंना वह वेर सजिलो वात हो तर वाकर व्यवस्था मिलैंना कठिन वात हो । जे जौन काम करत वाकर दुःख सुख उह जानथ, पाछ जात्रा सफलता पैंठा आत्मीय रूपम हर्ष विभोर फेन उह हुइथा । वस्तह के हम्र फेन प्रकाशनके लाग आवश्यक प्रवन्ध मिलैंना आवश्यक आर्थिक संकलन रचना संकलन कैंना सव प्रकारके मिहिनेत कैल वाटी । हम्रहीन आर्थिक सहयोग नैतिक समर्थन, रचना संकलन प्रकाशन कैंना सहयोग दिहुइयन सब जहन मुरी मुरी धन्यवाद देना चाहती- स्वीकार कर्बी व अस्त प्रकारके सहयोग करती रहवी कलसे हम्र आपन साहित्यके भकारी धुरखम्भासे उप्पर उठाए हालिसे सेक्ने वाटी । धन्यबाद ।

गोचाली परिवार नेपाल

" सत्यके मार्ग म लागी "

ले. – भीम बहादुर गोचाली
बर्दिया

आज कालक "आधुनिक भौतिकवादी" जमानाम प्रायः ना त मनैंनके हृदयके सरलता, शुद्धता हो और ना त आपन बोली-बानीके यथार्थता । यी स्वार्थवादी समयम वास्तविक 'सत्यवादी उदारवादी' मनै कौनो फे नै हुइत जर्स न लागथ । ठूला-वडा जें जिम्दार जौन फे वाट हुकनके स्वभाव, मानवताके नाता, व्यवहार और सत्यवादी सब नष्ट होगिल वा क्षण भरके मिथ्या भाषण मनैंनह फँसाकै आपन स्वार्थ पूरा कर्ना उद्देश्य वाहेक और कुछु नै हो । तब फे हम्र हुकनके मिथ्या भाषणम मनमग्न होक, पाछ लागक आपन जीवनहन दुःखके मार्गम लगैंना, समस्या उत्पन्न कराक आपन परिस्थितिहन विगर्ना, आपन जाति धर्म, सभ्यता और संस्कृतिहन गुमैंती जैंना काम फे हमनके साम्ने आजिक समयम विद्यमान वा । ज्याकर फलस्वरूप आज हमन मध्ये बहुतसे जनन् आपन कुल जाति धर्मके वारेम फे थाहा नैं हो । यी सव हमनके एकता तथा अशिक्षाके प्रतिफल और कमजोरी हो । हुइना त अशिक्षित मनैंनम फे चेतना रहत, नै रहत कना नैं हो । तर ऊ अन्धविश्वासम आधारित रहथ । सत्य व असत्य के बीच तर्क कर सेक्ना क्षमता नै रहथ और ना त ठीक वा बेठीक छुट्टयाय सेक्ना खुवी रहथ । उह मारसे स्वार्थवादी असत्यवादी, मिथ्याभाषी और दानव दुस्कर्मी मनै हुकनके लिए प्रियपात्र और सत्यवादी बन्थ ।

हम्र पूर्व कालके इतिहास हयार वेर उ समयके शिक्षित-अशिक्षित, वालक वृद्ध चाहा जौन कौनो ब्यक्ति वस्तु विशेषह सराप व बरदान देहत रलह उ सब सत्य हुइत रहकना हम्र पैंथि । काकर की उ समयके मनैं सव सत्यवान् रलह और सत्यताके एक सुत्रम बंधल रलह । उह मारसे भगवानके पूज आराधना वा जौन कुछ फे करत रलह उ सब हुकनके सत्यताके फल व परिणाम हुकनके साम्ने प्रत्यक्ष रूपम प्रतीत हुईत रह । तर आजकालके स्वार्थवादी, भौतिकवादी और द्वन्दवादी दुनियांम हम्र ऊ सव नै सोच्ना व नै चितैंना चाही/ बडे वडे साहु महाजन, जै जिम्दार अड्डा अदालतके कौंनो हाकिम हुइत चाहा साधु महन्त, जोगी फकिर, और भगवानके पण्डित पुजारी हुईत कौनो मर्फे वास्तविक सत्यता नै हो । आज उह मनै आपन स्वार्थरुपी उद्देश्य लेक विभिन्न ओहदामा वैठके विभिन्न किसिमके स्वाल ओढ्क देश और जनतम शोषण करके नङ्गा वर्नैल बात बनैती जाइत । उह शौषक सामन्ती हुक्र अन्धकाररूपी अ–

न्धविश्वासी जनतनसे सम्मानित-मर्यादित होक आपन स्वार्थ पूरा कर्ना उद्देश्य लेक सर्वसाधारण हन विभिन्न किसिमके लोभ लालच आदि देखा सुनाक अन्ध-विश्वासके जञ्जालम (भुल भुलैयाम) फसाइलबाट । जनतनह मिथ्या भाषणके विभिन्न तौर तरिकासे पिछलग्गु बनाक आपन सुत्रम बाँधके तथा पक्षेम लेक एक्थो शेरके ध्येय लेल बाट. और. जनतनह कठपुतली बनाक नचाईतबाट । आपन इज्जतके मतलव नै राखके केवल स्वाथ पूरा कर्ना ध्येय लेक दुनियाँके साम्ने कु:प्रवृत्ति नाटकके पात्र वनक अभिनय करना और अन्धकाररूपी जनतनके मनोभावनाह अन्ध विश्वासम परिणत कराक भुल भुलेयाम पारक नरकके डगरम लगाक अपन यमराज वनक रगत चुस्ना, हड्डी चबैना काम फे हुकनके यी समयम विद्यमान बा ।

शोषक सामन्तीनके स्वार्थ युक्त दाव-पेच वाला क्षणभरके इमान्दारीता, उपकारीता हुकन बहुत सत्यवादी इमान्दारी तथा कर्मठ व्यक्ति कहलैंथ । तर वास्तवम यी सब हुकनके सत्यता इमान्दारीतानै हो नात उपकारीता और उदा-रतावादी नीति हो ! ऊत एक्थो अङ्कुश लगैलक हो । ज्याकर माध्यमसे एक्थो चिल्लर (जुमरा) के रूपम हमार शरीरम प्रवेश होक खुन चुस्ती जैल और कमजोर बनैंथ ।

विना मतलवके झुठ वोल्क माकुराके व्यवहार कर्ना जाल बुन्ना हुकनके काल्पनिक आदत और सीप रहथ, उह मारसे हुकनके वानी व्यहोरा चञ्चल रहथ, वोली मीठ रहथ, ज्याकर स्वाद लेक हम्र वहुत मनमस्ती और मनमग्नम रथी । हुकनके प्रिय सहोदर बनजैवी । उह मिथ्या भाषी दानव दुश्कर्मीहन स्वीकार जैठी, जोकी हमन क्षण भरके आनन्दरूपी छाया देक उह पाछ प्रचन्ड घामम परिणत हुइथ / ज्याकर कारणसे हमन छटपटाईक परथ, तबुफेन हम्र जान नै सेक्थी और कथीकी यी त कौंनो जमानाके पाप के फल पईलक हो तर वास्तवम यी नैहो और असिन नै हुई स्याकथ/ यी त हमार चेतनाके कमजोरी हो, अशिक्षाके कमजोरी हो । ज्याकर फलस्वरुप हम्र राष्ट्रिय समस्यासे फे मुक्त तथा छुटकारा नईपाईस्याक हुइती औंर बिभिन्न किसिमके दु ख और समस्याके हमन घेर्ती जाईता, हमार समाज, हमार गतिविधि, परिस्थिति विगरती जाईता और हमार संस्कृतिफे लोप हुइती जाईता । पुर्खौं पुर्खासे उह दु:ख भोग्ती आईती / आपन मिहेनत उह दानव दुश्कर्मी शोषक सामन्तीनह लुटैती आइती, हमार गतिबिधि ज्यों का त्यों पलिवा । उह दुःख समस्या हमन पछेरती और घेरती आईता तब फे हम्र अभिन सम्म बुझ नै सेकल हुँइती ना त हमार

(बाँकी १२ पेजमा)

[बतकोही [माघे व मने]

लेः– लक्षमण गोचाली वर्दिया

माघे व मने दुई भाई हुइत । एक दिन हुक्र गाउँ घरमा घुम गैल ब्यालमन एक थो रजवा देख्ल । मने छोटी रलक ओर्से ऊ सक्कु हाल पुछ/ मने १० वर्षके रह व माघे १४ वर्षकेरह । माघेके प्रस्टसे सब बात बताय जान ।

मने—ऊ के हो दादु घोरवक मन चरल वात, दुइथो आग दुइथो पाछ वातस फे ऊ गाउँ घरके मनै जसिन त बात ?

माघे—ऊ गाउँ घरके राजा हो वाकर नाउँ हरिबीर हुईस, आग पाछ वातस वाकर सिपाही हुइस सवसे वरा सिपाही मनकन्या हो । उ कानुनी मुद्दा करना लाठी मर्ना बन्दुकके गोली भर्ना, चालु बा । कल्यानाउँक सिपाही भन्सा मन काम करथ । मल्या नाउँक सिपाही दारू मुर्गा छेगराके शिकार लन्ना काम करथ । हर्‌या नाउँक सिपाही रजवक जौन काम कर पठैलसे कर्ना ।

मने—रजवा कसिन मनैन कथ ? कि घोरवक मन बैठल मनैन केल कथ दादु ?

माघे—रजवा घोरवक मन बैठल मनैन केलनै हकल जाइत । आनक करल कमाही खैना मनैन डाका, सामन्त, शोषक, व रजवा कथ । जौन वाकर अह्राइल बमोजिम काम कर्ना मनैन सिपाही कथ ।

मने—हो बरामज्जासे बतैंलो हो दादु रजवा कना सामन्त के हो ?

माघे—हो भाई हरिबीर रजवा आपन गाउँ घरके जनतन लराई, झगडा बझा—बझाके मैंमिलैंठु जनता थाहा पैलसेफे ब्याल नै पैत । काना व माना कना थारू न के झगरा परा दिहल । कानाके छाई २० बर्षके रलहिस वाकर नाउँ सुनउली रह । सुनउली बहुत सुन्दर लडकी रह । माना थारुके एक्थो छावा रलहिस वाकर नाउँ गरिबे रह । हुँक्र गरिब किसानके लडका लडकी रलह । हरिबीर रजवा एक दिन सुनउली व गरिवेहन फँसाउँ त दारु मुर्गा खैंबु कना स्वाँचल और आपन सिपाहीनसे सल्लाह लिहल त पाँच जान मञ्जुर हुइल । हरिवीर रजवा ठीक बा कहल आव त सुनउली हन ज्या फे कराए पैंबुँ मन-मन स्वाँचल गुनल बुझलो भाई ।

मने—हैं असिनफे रजवा स्वांचल ना दादु लडकीके बेइज्जती कर्ना ।

माघे—हरिवीर रजवा गाउँ भरिक किसान जुटाके एक डाउँ करा

हचा, जा झट्ठ बला हचा गाउँ भरिक किसानन कहल । हचा गाउँ भरिक किसानन बलाके हरिवीर रजवाक घर जम्मा करल और किसानन खाली जमिन मन बैठाईल । एक पाँजर रजवा और सिपाही बैठल, बिच मन काना व माना हुकन बैठैल त हरिवीर रजवा कह लागल—"सुनो हो पञ्चो भाई एक बाट मैं कह तुँ" थाहा पैल बातुँ काना थारूके छाई सुनौली मानाके छावा गरिबे त खुब मजा करल बाट । 'यीहाँ का रंडी पातुर ठाउँ हो, हिकनके बिरूवा कर्ना हो" हरिबीर रजवा कहल । मन कन्या सिपाही जुरूक्क उठके कह लागल हिकनक बीरुवा तनैं कैके नैं हुइ नैंत हमार गाउँ भार हुइता हो किनैं हो ? गाउँके किसान हुंक नैं थाहा पैलक ओर्से सक्कु जान विरूवा त करही परल कल । रजवा हांसलह ह झुठ ब्बालल कना गाउँके मनैं थाहाँ नैं पैल । मन कन्या सिपाही कहल " जाव आपन छाई छावन हन बलाके लानो नैंत बुट लाठी-गोली पैंबो" धम्की दिहल । डरले रिसले चुर होके कुछु नैं बोल्ल । उहांसे काना व माना आपन छाई छावा हन बलाकन खुब गरिय-इल । "बाबा हुंक हमन नागरियाबो हम्र कुछु नैं कर्ल हुईती" । कौन डर बोजैबी कल ब गैल सुनउली व गरिबे उह सभाम । जब हुक् सभाम गैल त दुनु जहन बिचम बैठैल । मन कन्या सिपाही दुई बुट मारल । हुँक रुई-रुई ब्बालल्गल । " हम्र जलमसे असिन काम नैं कर्ल हुई काकर हमन मर्लो" । राजा साहब झुठ मर्लो यी सब झुठ जाल हो, दुनु जन एक स्वर मन कल त हरिबीर रजवा उठके ए ठीकसे बोलो तुह कहल । जा मनकन्या कुट साले बदमास चोर हिकनके चार चार हजार रूपियां जरिबाना लेनाहो । रिसले चुर होके राईफल बन्दुक उठाके राफलले मनकन्या सिपाही दुनु जनक छातीम निशाना लगादिहल । आब ठीक बोलो नैं त गोली चलादिहम कहलागल । सुनउली व गरिबे डरले थर-थर कर लगल । नैं करल काम फेन हुइती कह पर्लन । काकरत बदमास आग चार-चार हजार रूपियां काहाँ पैना हो घर मन अतरा भुखाही वा काना व मानाहन रूई ऐंलिन । हे ! भगवान हमनका दुःख परल हमनके खैनो गाँस नैं हो, लगैना कपास नैंहो, बैठना कना ठाउँ नैं हो कलसे हम्र चार-चार हजार रूपीयाँ कहाँसे पैंबी कल । मने भाई बुझलो रजबा कना असिन रथ ।

मने-हो दादु रजवा कना व सामन्त कना त बराखराब रथ ना दादु । असिन गरीब मनैं दिन भर मजुरी कैक फे साँझ बिहान के खैना फें मजासे नैं पुग्ना हुकनक त सर्वस्य गैल सेफे नैं पुग्ना जसिन रुपियाँ के देहिन त दादु ?

माघे- हरिवीर रजवा स्वाँचल हिकन फसैना मौका वा । ऊ कानाहन

ऋण चारहजार रूपिया दिहल व कहल त्वार काम मैं बना दिहतु, तोहीहन बचाइतु । "तैं आपन छाई हन म्वार घर पठादिहस नैं त मजा नैं हुई" । एक हजारके दश हजार रुपियाँ के हिसाब से बुझाय परि व सालभर मन भुक्तान कर परी कहल । माना हन फे हरिबीर रजवा ऋण दिहल, माना हनफे ओस्तके एक हजारके दश हजार साल भर मन भुक्तान कर परि कहल । मानाके छावाहन फे आपन घर कर्मयाँ लाग कहल व तमसुक बनाईल असिन घिन लग्तीक काम मनफे हुकन मञ्जुर हुईपर्लन व रूपियाँलेक सभाम जाके बुझैल व आपन छाई-छावन छुटाके लनल । बिना पट्टक घिनाहुनवाट आरोप लगाके सुनउली व गरिबे के दारखादेल । काना व माना झन दुःखी गरिब हो गैल । दश कट्ठा व एघार कट्ठा जमिन बातीन ।

मने-दादु ऋण कसिकन तिर्ल जग्गा, घर सबले लेना जसिन ना दादु । हिकन कतरा हेलाहा कर्लक हो बा बाई !

माघे-ऋण काना व माना जग्गा नैं बेचके तिर्बी कना सोचल रलह । तर रुपीयां तिर्ती-तिर्ती चालिस हजार पुगगैल व साल फे पुग गैल, त हरिवीर रजवा आब सालफे पुगल सक्कु ऋण बुझाओ कह लागल । आमिन चालीस हजार रूपियां बांकी वा । व घरमन रहल चिजफे उह रजवा लैगैल व सुनउली हन जबरजस्ती बेईज्जती कैके भूंडी बोका दिहल । हरिबीर रजवा डाँर कैके फे खाइल घरमन रहल चीज फे लैगैल । असिन आपन दशा समझके काना व माना हन बहुत दुःख लग्लन त आपन दुःखी स्वरम गुन गुनैल-

घरत म्वार टुटलरह उजारके लैगैल
भाँडा म्वार फुटल रह उ फेन लैगैल
कतिबा महिहन नैं छोरबु तोही हन
असिन दुःख परल महिहन काहां जाके सुनाउँ केहिहन ।
घारीम रह बुह्राईल वर्दा उ फेन लैगैल,
गोठवम रह बुह्राईल भैंसिनिया उ फेन लैगैल ।
घरमन रह एक्थो लडकी उ फेन बिगारल,
कतीवा महिहन ऋण नैं टुटल त्वार फेन
असिन परल म्वार दुःख कहां जाके सुनाऊ केहिहन
जग्गा जमिन लेलिहल कमाईल बाली खादिहल
कतिवा महिहन नैं छोरबु तोहीहन,
असिन दुःख म्वार दुःख काहाँ जाके सुनाउँ केहिहन ।

काना व माना सल्लाह कर्ल जाहाँ गैल से यीह दुःखी स्वरके आवाज

छोडतो नेङ्गभिर्ल । विचारन के घर मन आव कुछु नै हुइतन काकरही के हुंक दुनु जन सोचल यी रजवा काहाँसम्म हमन लराई । आव हाम्र आपस मन नै लर्ना हो । बुझलो, यी पापी हो, यी दुश्मन हो कना चिन्ह परथ हेरो मने भाई ।

मने-हरिबीर रजवा असिन कराइल त भगवान कभो दुःख देहिस की नाही दादु ? कि सद् असेह करैती रही ?

माथे-नाही भाई जवसम्म हम्र फुट-फाट रहबी एक जुट नै हुईबी तब सम्म हमन अस्तहके सतैती रहही शोषक सामन्त, रजवा हुक्, अस्त के दुःख देती रहही हुकन केल नाही नाही जेही पैलसे फे बस्तह कराइथ यी हरिवीर रजवा ।

मने-कौनो अड्डा मन फेन नै उजुर कर्लत सुनौली हन बीगार दिहल कैक ?

माथे कानाव माना पहिल सि०डी०यो० मन गैल त सि०डी०यो० साहब नमस्कार कर्ल दुनुजान । जव हुँक नमस्कार कर्ल त सि०डी०यो० आपन मुन्टीकेल हिलाइल व तुह्र कौन कामसे ऐलो कैक पुछल । काना व माना आपन सक्कु हालखवर हरिबीर रजवा हमन असिन दुःख दिहलबा की हमार लड्का लड्कीके बीचमन अनैतिक सम्बन्ध देखाके नैमजा काम हुईलक आरोप लगाके जबरजस्ती हमनके उपर लाठी, गोलीके धम्की देके हमनसे आठ हजार रूपियाँ डाँर खादिहल । हमन ऋणफे उह दिहल, चालिस हजार रूपियां फे दे दरली तब्भु ऋण नैटुटल कहथ, चालिस हजार रूपियाँ अमिन बाँकी बा कहथ । हरिबीर रजवा काकरना हो सि०डी०यो० साहब । असि

८ पेजको बांकी

चैतना आईल हो और नात हम्र ठिक व बेठिक, सत्य वा असत्य जान नै सक्थी और नात सज्जन व बदमासहन चिन नै सक्थी । खोज-खौजक उह दानव दुश्कर्मी के सेवा सहायता और पाठ पूजा कर जैठी । यी हमार मानसिक बौद्धिक एकता और अशिक्षाके कमजोरी हो तसर्थ यहि से मुक्त हुईकते और आपन समाज तथा देशके विकास करके भविष्य उज्ज्वल पारक्ते हमन सत्यके मार्गम लागक आपन एकता तथा सङ्गठन हन मजबुत बनाक यी दानव दुश्कर्मी शोषक सामन्तीके विरूद्धम लडके हिकनके सत्ताहन बेपत्ता पारके नयां जनबाद आनके नेपाल मातृभूमिहन स्वच्छ और निष्पक्ष बनाक सक्कुनके हक अधिकार समान कराई पर्ना बा कना गोचाली परिवार आस्था और विश्वाव करथ ।

हजारके तमसुक बा कहथ घरके धनसम्पत्ति फे लैगैल, घर कुरिया फे उजारके लैगैल, सुनौली कना एकथो लड्कीहिन फे लैगैल । गरिवेहन कमैनासे फुर्सद नै हो । आब का करना हो कल । सि०डी०यो० उल्ट हुकनहन झपारल । का हरिबीर रजवा असिन करी ? कब्भुफेन असिन नै करी । तुह्र बेईमान हुईतो आब तुहन थुन देहम, लाठी गोली पैवो कौनो अड्डा अदालत थानाचौंकी कुछ नै करी । चुप लागके घर जाओ । छ महिना जेल पैवो तब थाहाँ पैबो कहल । काना व माना कल जाहां गैलसे फेन हमार सुनाउँ नै हुई आब हम्र बनवास लगली । हमार आग पाछ क्यु नै हो ! काना व माना कल हम्र जत्रा दुख गरीब बाटी, सामन्तीनसे सतावा पैलक सक्कुजान एकजुट हुई हाथम हाथ मिलाके, काँधम काँध मिलाके, आवाज म आवाज मिलाके, आपन हक व अधिकार लिहक लाग बहुतसे बहुत आपन मित्र बनाई व संघर्षके मैदानम उत्री तब केल हमार कल्याण हुई । व यी सामन्तीरूपी राजा महाराजनके अन्त हुई । सिपाही हुकनफे आपन मित्र बनैना प्रयास करी कल । अत्रा सल्लाह कर्ल व काना व माना गरीबे जसिन पुरुष व सुनौली जसिन महिलन आपन मित्र बनाके संघर्ष कर्ती गैल । हुकनके संघर्ष चर्कती गैल व दल फे बढैती गैल त हरिबीर रजवाहन मनकन्या सिपाहीका कहल कि हेरो राजा साहब काना व मानाके मित्र (गोचाली) बहुत होगैल हिकनके संघर्ष रोक्ना कौनो उपाय नै हो । आब बचना उपायफे नै हो, हिक्र कपार फोरके छोरहि । काकरकी संघर्ष बढती जाइता । यी संघर्षके दौरानम हरिबीर रजवाहन जनता हुँक एक दिन वाकर बदला लेक छोडल व बहिहन उ ठाउँसे भाग पर्लस व उह ठाउँम जनतनके सरकार बनैल ।

"प्रिय गोचालीहन ग्वार बधाई"

ले–जे०पी० चौधरी
बर्दिया

प्रिय गोचालीहन ग्वार बधाई बा काकरकी गोचाली एकथों पिछडल समाजके सपोर्ट कर्ती खाए नै पाके मुना गरीब भिखमङ्गा, दवाई करकलाग एक पैसा फै नै पाके बिस्तारम छटपटैटी मुना रोगी हुकनके एकधुर फे जग्गा नै होके फिरन्ता जीवन बितैना सर्बहारा हुकनके, समाजम अधिकार नै पाके अधिकार बिहीन हुईलक महिला हुकनके बिभिन्न प्रकारके जालझैल, शोषण, अन्याय, अत्याचारके कारण रातदिन चौबिस घण्टा काम कैक फे एकगांस खाय नै पुग्लक बहुसंख्यक गरिब किसान, कमैया, मजदूर सर्बहारा हुकनके समस्या समाधान कर्ना सही डगर देखैना उद्देश्य लेक अनेक किसिमके दुःख कष्ट सहती जार–घाम, आंधी–बेहरी, हिला–किचा आदिसे सामना कर्ती बहुत समयके बाद आज फे कमलके फूला असक जगमगैती हंस्ती निकरल देखके महिहन बहुत खुशी लागल बा ।

हो विश्वके इतिहास ह्यारबेर सोषक सामन्त जाली फटाहा, भ्रष्टाचारी हुँक्र जहिया फे सिधासाधा जनता हुकन अनेक किसिमके जाल झेलम फँसाके शोषण, अन्याय, अत्याचार करल जाईथ कलसे शोषण अन्याय, अत्याचारम परल जनता फे अन्याय अत्याचार से मुक्त हुइना डगर खोज्ती रथ । जब हुँक्र (शोषण, अन्याय, अत्याचारमन परल जनता) अन्याय अत्याचार से मुक्त हुईना एकथो सहि डगर भेटैथ त उह डगरके माध्यमसे मुक्त हुई भिर्थ । गरीब जनता हुकन मुक्त हुईथ देखके शोषक हुँक्र अनेक किसिमके जाल फैलाके फँसाए खोज्थ तब फेन गरीब जनता हुँक्र हुकनके जालहन फारके आपन मुक्तिके डगर नै छोडत व आखिरमे जाके शोषित, पीडित जनतनके बिजय हुईथ कनाबात बुझ जाईथ काकरकी शोषित पीडित जनता बहुत धेर रथ व हुकनके शक्ति सबसे भारी रहथ ।

हमार देश नेपालम फे शोषक, सामन्त, जाली फटाहा हुँक्र बहुसंख्यक (९५%) जनता हुकन अनेक किसिमके जाल झेलम फँसाके शोषण अन्याय अत्याचार कर्ल बात । एक ओर विदेशसे दैनिक उपभोगके लाग ऐलक नोन, मट्टीतेल, लुगा–कपडा, भाँडा–कुंडा, कृषि सामग्री, मल कीटनाशक औषधी जसिन

बिभिन्न किसिमके ब्यापारम महङ्गीके भारी बोकादेल बात कलसे दोसर ओर गाउं घरके सामन्त, (जमिन्दार) जाली फटाहा हुँक रू. १००/– एक सय ऋण देक वहीमन एकथो शून्य थपके रू. १०००/– एक हजार बनाके सिधासाधा जनता हुकन शोषण कर्ल बात । ओत्रकेल नै होके २–४ कट्ठा जग्गा रलक जनता हुकनके जग्गा फे बिभिन्न किसिमके जालझेल कैक आपन नाउँम दर्ता कर्ल बात व हुकन सुकुम्वासी बन्ना बाध्य करैलबाट कलसे अप्नभर कुकुर बिलारके नाउँम हजारौं विगाहा जग्गा नुकैल बात । याकर फलस्वरूप बहु–संख्यक जनता हुकन आपन जिबिका चलाईक लाग और मनैनके हरुवा-चरूवा बनपरल बा कलसे बहुतसे जनतनके लडका हुँक्र त आपन देश नेपालम काम नैपाके बिदेशके शोषकनके सेवाकर जैना बाध्य हुईपरल बा । अस्तहके दाङ्गके थारुजाति हुकन फे शोषक, सामन्त हुकनके अन्याय अत्याचारके कारण आपन आवाद कर्लक कृषि योग्य भूमि दाङ्ग छोडके बाँके, बर्दिया, कैलाली, कञ्चनपुर आदि ठाउँम जैना बाध्य हुई पर्लन । जब हुँक्र यी नयां ठाउँम गैल त उहां फें उह सामन्ती सरकार, ओस्तहँके शोषक सामन्त रहल ठाउँ, उह बर्से उ ठाउँम जाके फे उह गती पाके आनक कमैया बनके शोषक सामन्तनके सेवा कर्ना बाहेक और कुछ फे नै पैल । आज गरिब कमैया हुकनके अवस्था पशु से गैल बा । काकरकि हुँक्र रात दिन २४ घण्टा काम कर्थ व एक छाक खैना, एकजोर लुगा लगैना, रोग लग्लसे दवाई करकलाग पैसा नै पैना जसिन समस्या बाटिन । आपन छाई छावन पढाके शिक्षित बनैना बात त झन सपना जसिन हुइथिन । हुँक्र भुंख ना पियास, रोग ना बिराम, जार ना घाम जसिन अवस्थाम फे मिहिनेत कर नैं छोडत । तर असिक मिहिनेत करवेर फे हुकनके घरम कौनो चिज फे नै पुग्तन । यहि सब दुःख, दर्द, बेदना हन प्राखक लाग २०२८ सालम जलमल गोचाली शोषक, सामन्त, जाली फटाहा, निरंकुश तानाशाही सामन्ती सरकारके बिरोधम आवाज उठैती दाङ्गसे बुढान अर्थात बाँके, बर्दिया, कैलाली, कञ्चनपुर अथवा देशके बिभिन्न ठाउँम थारू भाषाम पहिलो अङ्कसे लेक छैठौ अङ्कसम्म प्रकाशित होस्याकल और आज फे सातौ अङ्कह लेक प्राणसे फे प्यार मैगर गोचाली टुप्लुक्क आ गैल ।

हमार गोचाली पहिलो अङ्कसे लेक छैठौं अङ्क सम्म बिभिन्न किसिमके अवस्थाहन पार कर्ती तानाशाही पञ्चायती ब्यवस्थाम फे कब्भु भूमिगत त कब्भु खुलारूपम शोषक सामन्ती जाली फटाहा हुकनके बिरोध कर्ती युगौ युगसे सामन्ती बन्धनम रलक गरीब किसान, कमैया, मजदूर, सर्बहारा, सुकुम्वासी हमेशा ठग्वा मिच्वा पैलक बर्गके हितैषी बनके शोषक सामन्ती जाली फटाहा

भ्रष्टाचारी हुकनके तानाशाही शासनके पर्दाफास कर्के गाउँ घर घरम झोपडी झोपडीम आपन आवाज पुगाके शोषक सामन्ती जाली फटाहा हुकनके तानाशाही सरकारहन पल्टाके गरीब किसान, कमैया, मजदूर, सुकुम्बासी, सर्बहारा बर्गके सरकार स्थापना करकलाग सक्कु जनतन काँधम काँध, हांथम हाँथ, आवाजम आवाज मिलाके, एकता सङ्गठन ब संघर्ष करकलाग सही डगर देखाके लाली घाम झल्कैती एकदिन अवश्य फे गरीबके ओठम मुस्कानके हाँसी हसैना उद्देश्य गोचालीक रलक बर्षे मै गोचालीहन आपन तर्फसे बहुत बहुत बधाई देती बिदा लिहतु ।

" युबा जोश "

— रमण चौधरी [बर्दिया]

हिमालके काखम सुसेली बजैती पबित्र धरती ।
जन्मैतीबा बीर बिद्वान यी हमार देश ।।
यी युवा रगत नैसहबी कबु मलिन बदरी ।
चहबी यहां झिझिरे फोरके अजरार बिहान ।।
बलगर आंधी बोकके झट्ट कुहिर हटाई ।
लाल बत्ती राँको बारके झट्ट प्रकाश फिराई ।।
यी प्रतिभा व उ लौंव शक्ति संकलित धैर्य बात ।
सत्यक लाग बलिदान देना हरदम तयार बात ।।
बीर योद्धा योहाँ लगाके जइथ जोसिलो रगत ।
शहिद तुहीं लगाके गैलो डगर के सुन्दर ।
बीर छाती थप्लेा ईमान्दार होके रहबी अमर ।।
रगतसे सिंचल भूमि सच्चाई अमर बा ।
क्रान्तिक स्वर गुजइना बिगुल कार्यशील परल बा ।।
स्वतन्त्र ब्यक्तित्व जन्मैना साहस हमार परल बा ।
नेपाली होके नेपाल सिंगरना अधिकार झट्ट अन्ना वा ।
शहिदके सपना साकार पर्ना हमेशा तयार बाटी ।।
अइना सारा थी भाबी पिढी मुस्काई फुलेबो ।
दाइके सिन्दुर पोतलक योहां लाल रगतले ।।
धरती के आंसु पोछने बाटी योद्धा के साहसले ।
परिबर्तन लन्ने बाटी जनतनके एकताले

"विहानके अजरारमे नजर दौराई बेर"

ले. विभय गोचाली

तीस बर्षके लम्वा मधँरीया रात विताके भिन्सारसे "विहान" हुईलक संकेत लेक गठन हुइलक "थारू यूबा परिवार काठमाण्डू" के बिहान पहिला अंक १ (२०४६ अशोज), बर्ष १ (थारू भाषक सामयिक संकलन), मे ३, कविता ३ लेख ६, कथा १ नाटक १ चिठी देखक मिलल ।

आंख मिस्ती भोर विहानीक नजरसे हेरके आपन तर्फसे अन्दाज लगाई बेर हमार थारु जाति के आपन सभ्य भाषा संस्कृति, रितीरिवाज, चाल चलन मौलिक रहल बावै, लेकिन हमार कमजोरीके वजहसे परिमारजित कर नै स्याकल हुइती कना चिज बुझैना कोसिस कर्लेआट धेरसे लेखक कथाकार एवं नाटककार हुँक्रे । राजधानी जसिन महङ्गी ठाउँमे बैंठके उच्च शिक्षा हासिल कर पैना हमार थारू जाति लग–भग आर्थिक रूपमे संपन्न जरूर हुईही कना अन्दाज कर सेकबी लेकिन जातीय व भाषिक रूपमे शोषित हुइल बाटी, हमार साहित्य राष्ट्रिय मान्यता पैना चाही गीत, कविता लोक गीत समाचार आदि रेडियो नेपाल से प्रकाशित हुइना ठाउँ पाईपर्ना चाही कहना विचार "थारु युवा परिवार" काठमाण्डूके लेखक हुँक्र झल्कैले वाटै ।

सरसरती ह्यार बेर कमैया कना कथामे वास्तविक घटना व तमाम कमैयनके अवस्था खुलस्त पारल बावै तर वाकर निराकरण वा समस्या समाधान कसिक हुई पर्ना हो कना विषयम मौन रहल बुझ जैठा । भूतवा कथामे थारु समाजहन गरीब बनैना प्रमुख भूतवा जांड दारू हो, जांड बनाए छोडना साथ सम्पन्न हुइलक उदाहरण बनल वाट राम लाल चौधरी – तर मादक वस्तु जाँड, दारु, अल्कोहल कसिक कत्रा वर्ष पुरान समयसे बैदिक कालमे समेत सोमरसके नामसे देवता लोग, असुर लोग समेत प्रयोगमे लनलक वात कुछु खोज पूर्ण व अर्थ पूर्ण रहस्य नुकल रहल जसिन बुझ जैठा । काकरकी ई. पू. ४००० बर्ष पहिलसे नशा लग्ना बस्तु के प्रयोग मध्य चीन लगायत आर्य हुँक्र सोमरसके नाउँसे प्रयोग कर्लक प्रमाण देखैले वात व आज फेन रङ्गी बिरङ्गी अपसरान के नामसे बन्द बोतल स्तर युक्त झोपडी से झक-झक्या महल तक चारो पहर चौकन्ना हो के स्तर अनुसारके पहरा लगैती देख मिलत ।

सरकारके राजस्व स्रोतसे बढी हुइना वर्से होया जनतन गरीब खाय नै पुग्ना उपाय कर्लक हो। हम्र जान नै सेवती लेकिन हमार जसिन गरिब देश-लगायत फ्रान्स जसिन धनी देश फेन गाउँ, घर टोल, इलाका, शहर-बजार वाटो-घाटो, रात दिन जव जाहाँ फेन मित्ना बस्तु कौन हो कलसे रक्सी कना उत्तर मिलठ लेकिन यो कथाके कथाकारजी राम लाल चौधरी जांड रक्सी से गरिब हुइलक विपीनजी बाहुनके नातासे पत्रिका पढलक व सम्पन्न हुइलक छोटकरी भ्रम मूलक उपाय के ब्याख्या करल जसिन लागत। भूतवा कथाके कथाकारजी जांड न बनैना व नै खैना गरीबनके समस्यासे परिचित हुइना कोशिस कर्ना चाही।

असौक माघ 'बिहान" के एक मौलिक व वास्तविकता से सम्बन्धित नाटक हचार बेर घरानीया थारू जिम्दार के आदर्श झलकथ व "भूतवा" जसिन जथामे जाँड दारूसे थारू गरीव बन्लक ठिक उल्टा बात मिलठ। खोजनी बोजनी करे बेर अगँनामे बैठके सब जाने जाँड दारू शिकार खाइत-मलिकवा [जिम्दरूवा] बिचमे बैठके पुछ-ताछ व ठेगान लगैठा [खैना पिना मजासे हेर्लक वर्से] मालिकवक बातसे धेर मलकिनियक बातमे विश्वास कैना बात कर्मैयांसे बुझ जैठा। अन्तमे सब जहनसे बात फरछवार कर्के जिम्दार फेन जाँड दारू [माघ मनौनी] खाय, लग्लक बात बुझबेर जिम्दरवा गरीब हुइलक जसीन नै लागत जबकी भूतवामे जाँड के कारण गरीब हुइल देखैले बात।

सार संक्षिप्त रूपमे कना हो कलसे थारु भाषा, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता, चाल चलन रीति रिवाज के संरक्षण संवर्द्धन व परिमार्जन कर्ना उद्देश्यमूलक यी पत्रिका उच्च स्तरसे शिक्षामे संलग्न हुइलक युवा थारुन के प्रयास हुइलक वर्से सुधारात्मक के नै हो के हमार जसिन पिछडल थारू समाजहेन वास्तविकता के बोध करैना प्रगति के सही डगरा देखैना लक्ष्यमे अग्रिम भूमिका खेल्ना व अगुवाई समेत करस्याकी कना सुझाव सहित प्रगति के लाग शुभ कामना- अस्तु:

"आग बढी गोचाली"

—ले. के०पी० चौधरी बर्दिया

आग बढी आग बढी ओ मोर गोचाली
आप्त आईल सक्कु जहन जवानी
गरीव दुःखी सक्कु जन संगठित होई
सक्कु जन क्रान्ति कैके नौलो जनवाद लानी
आग बढी आग बढी ओ मोर गोचाली
आप्त

कोई लेवी बन्दुक गोली कोई लेवी लाठी
ज्याकर जोत वाकर पोत नारा समेत देहती
आग बढी आग बढो ओ मोर गोचाली
आप्त

कोइत वात सामन्त पूँजीपति कोइत साहुकार
सिन असिन शोषकन मास्क कवि बराबर
आग बढी आग बढी ओ मोर गोचाली
आप्त
अ

हमार देशक शोषकनके टेक्सी हरावर
गरीब किसान भोक लेक हुईली हाहाकार
आग बढी आग बढी ओ मोर गोचाली
आप्त आईल सक्कु जहन जवानी

"आंखक किर कीट"

ले:– एक गोचाली

हमार "थारु" जाति पहिलसे खेती किसानी काम कर्ती ऐलक पुरान बात बस्कोहिसे पता मिलठ व आज तक हमार मुख्य पेशा खेती देख परल बा / हमार देश गरीव हुइलक वर्से खेती व्यवस्था पुरान बात, पुरान व्यवस्थाम खेती करकलाग धेर जनहक जरूरत परत यीह ओरसे हमार जाति बरा परिवार बनांक रथ। परिवारम काम कर्ना फे सजिलो हुइथ । जिम्दरूवन फे थारु समाजम वर घर बनैना हाथ बातीन धेर जहान हुइलक मनैन केल जमिन देना कर्थ । जहोरसे आपन काम सुधर जाय यीह हुकनक विचार रहथिन ।

आजकाल विज्ञान के युगम छाई-छावन हम्रे फे पढाई परथ बना विचार सम्मकेल अइलिन विस्तार से पढैना शुरू फे कर्ल । जब देश–विदेशके हालत पुस्तक पत्र–पत्रिका से बुझती गैल त हुँक सही व गलत चिज छुट्टाई सेकना बन्ती गैल । आपन समाजम रहल सहिचिज (चाल चलन) ह लेती और गल्ती चिज (चाल चलन) छोडती आइत ।

एक थोर सुग्घर समाज बनैना डगरम लग्ल याकर प्रभाव सक्कु मनैनम परल । जब गाउँक मनै सुग्घर दगरम लग्ती गैल त गाउँक गुरूवन समाजमक मुन्ती (आगतार) व जिम्दरूवनके समाजम मान मर्यादा कम हई लग्लीन त हुँक आपन मान मर्यादा बचाइक लाग बहुत उपाय सोच्ल । आपन मान काम कर्ना मुल जड आपन समाजमक विद्यार्थी (शिक्षित) वर्ग जो ठहरैल । विद्यार्थी लडका जो हमार पूर्खासे चल्ती अइलक चाल चलन हेराइक लाग बात हिकन पद नै देना होकैंक पढाइम अनेक वाधालग्ना हमार समाजम एक दुई थो कसिगरकेरूपम बात, और तर्फते हमन 'क' अक्षर फे चिन्लहक द्याख नै सेकना जिम्दरूवन बात । कौन पापी आपन जीवनह सुख से दुःख वर लैजाई चाहत । जिम्दरूवन त झन हमार समाजसे (शिक्षित) पढल लिखल पर्ल आपन बेठबेगारी कहाँ हेराई चहँही ।

एक झिल्का से सारा बनवा जरा देहत कहत जसिन हमार जातिके वैज्ञानिक युगह नै बुझके आपन मान मजादि बिर्तकल खना मनै झिल्का के रूपम बाट त आपन बेठवेगारी विग्र नापाए कहना जिमदरवन डिजलके रूपम हुँक समाजह जलैना (आग वढ नै देना) उपाय कर्ती बात ।

एक दुई जनाके भ्रम जालसे छुटकारा दिलाईक लाग एकथो सांगठनिक गोचाली परिवार बनल वात । गोचाली परिवार समाजम रहल कुरीतीह छोरक ऐतिहासिक (मजा) चिजके सुसार सम्हार कर्ती आईल बा । या त मजा चाल चलन के बचाव व आग वढाइक लाग डगर देखुईया बनल वा ।

गोचाली परिवार सक्कु न्याय चहना जनतनके (पथ प्रदर्शक) अगुवा बनल बा ओ गोचाली परिबारके अगुवाई सफल हुइती आपन चिताइल ठाउँ सम्म पुग सेकी कहना पूर्ण आशा बा ।

"मैना"

ले० कौनो गोचाली

अरी मैना बहुदल आईल-२ खैत कहां आईलरी मैना ।
गरीबके टुटल झोप्रीम कुछु नाही आइलरी मैना ॥
अरी मैना जिम्दार शोषक सक्कु जाली मन्त्री बनल वाटरी मैना ।
भाषण भर मिठ–२ काम सक्कु तीतरी मैना ॥
अरी मैना भुख्ल प्याट नङ्ट छाती चुसहन के कामरी मैना ।
साल भरके बिघा बाली खायफे नै पुग्ना री मैना ॥
अरी मैना दाश प्रथा मनै वेच्ना सौंकीप्रथा वाटरी मैना ।
लौव–२ तरीकासे कामद रहन चुसतरी मैना ॥
अरी मैना हम्र फेट मनाई हुइती हमार फेट लाल खुनरी मैना ।
काकर असिकेन हम्र हेला वाटीरी मैना ।
अरी मैना मार्क्सवादके शिक्षाले आग बढ परलरी मैना ।
सक्कु न्याय प्रेमी हुँक एक जुट हुई परलरी मैना ॥
अरी मैना लौव दिन लान पर्ना बारी मैना ।
ढोरी छुटलक दिन थेसे बलकर पर्ना वारी मैना ॥

"जनबादी चिन्तन"

लेखक- निम प्रसाद चौधरी
गोवरैला, वर्दिया

जसिकेन समय गुजरती जाईता वस्हेके समयके छोट-२ हिस्साहे लेके बडे-२ हिस्साहन कई नाउसे पुकार गैल वा। जस्तकि दिन, साल व युग। हमार धर्मशास्त्र अनुसार समयके बडे भारी भागहन युगके नाउसे पुकार गैल वा।

तमाम युग बित गैल जस्तकी- सत्य युग, द्वापर युग, त्रेता युग व कली युग आदि आदि। सत्य युगसे पहिल का युग रह ? उ मैं जान नैं स्याकथुं सत्य युंगथेसे तमाम युग बित गैल। म्वार सोचाईम का लागत कलसे शोषक व शोषित वर्ग सत्य युगम फे रलह। कसिकन कलसे हम्र धर्म शास्त्र हयार बेरका पैथी कलसे सत्व युगमन दिउतन व ऋषि मुनि हुकन राक्षस सताईत व जाके हुकन खाफे डारँत कना कहाई भेटइथी। उ जमानाम यथार्थम कनाहो कलसे राक्षस कसिक शोपक वर्ग व दिउँता ऋषिमुनि कसिक शोषित वर्ग व विद्वान वर्ग नाउँ धरवा पइल। उ जमानाम वत्रा शिक्षाके विकास नै हुइल वर्से लौत्र-२ शब्दके खोज नई हुइल वर्से शोषक वर्गके नाउ खाली राक्षस धई गिलस। आज के जसिन शिक्षा के काफी विकास हुईल रहत त उ जमानामफे शोषण करूइयन के नाउँ सामन्ती अन्यायी व जाके भ्रष्टाचारी धरल जइने रह।

जात्तीके कनाहो कलसे सत्य युगमन फे लाट, स्वाज, निमुखा, मनई केलुक नाही, हुँकन दुःख दिहुइया मनई केल नाही वल्कि जब-२ अन्याय अत्याचार शोषण दोहनके पराकाष्टा हवाए तब-२ अन्यायी अत्याचारीनसे अर्थात आततार्इनसे घनघोर स्वाधीनता रण संग्राम करके अद्वितीय वलिदान दिहुइया मनैं फे रलह। जेहि तब दिनम भगवान व दिउँता, आव दिनम जुनुक नेता, शहिद व जाके न्याय प्रेमी नाउँसे पुकार जाइथं।

ज्या जत्रा लम्बा चौडा बात बतवँलसे फे म्वार खास कह खोजलक वात काहो कलसे, जसिकेन आज हमार समाजम गरीब किसान, मजदूर, कमैयन यहाँके सामन्त व पुँजीपति हुँक्र शोषण करथ। वस्तहके उ युगम फे दिउँतन राक्षस वर्ग दुःख देना काम करत; यीह वर्सेका कह सेकजाइथ कलसे शोषक वर्ग शोषित वर्गहन उह युगसे आज तक शोषण कर्ति आईत। अन्यायी व अत्याचारीनके दमनकारी रवैयाके प्रतिकार करूइया वीर फे पहिल हेसें बाट। तर हमार समाजमन सही-सही चिजके अर्थ गलत-गलत लगाजाइथ। जस्तकी भगवान कना त बहुतमे- बहुत जनहनके हितके लाग त्याग व बलिदान दिहुइया वीर आत्मजन हो। कत्रा दुखके वात बा कलसे भगवान कना त पथरक मुरूत पो हो कना किसिमके भ्रम जालम पार गैल बा। मैं पाठकवर्गनसे का अनुरोध करतुँ कलसे हम्र असिक गहिरसे सोच-विचार करीत मनैं बाहेक और कौन विशेष शक्ति हुईलक चारथो हाथ हुइलक आठ थो हाथ हुईलक भगवानहन कौन कलाकार द्याखल हुई व बनाइल हुई। यी सम्पूर्ण-चिज कहासम झुठ हो कलसे जत्राकि मरुभूमिके जल समान।

वर्दिया जिल्लाके ठाकुरद्वारा कना ठाउँ के ठाकुरजी कना भगवानके मुरूत आने सृजल हो कहना धारणा बा। खास कैक बिचार कर पर्ना बात काहो कलसे उ ठाकुरजी कहना भगवानके भेग्वा वडे चाकिर लोहाकिक पत्तुरके वातीस। का उ फे अपने सृजबेर लोहाकिक पत्तुरिक भेग्वा घालके निकरल हुई। वास्तवम भगबान मान पर्ना हो कलसे ऊ मुरूत बनुईया सिपार कालीगढहन उ एक्थो सुग्घर-सुग्घर कलाके नमूना देके जउईया कलाकार अग्रजहुँक हिन मान पर्ना हो। हम्र असिक सोच्बी त वल्ल काम लग्वी नैंकी नाही।

धर्मके वास्तविक अर्थ देश दुनियाँके हितके लाग आपन करपर्ना जौंन कर्तव्य हो वहि कह जाईथ। तर यहाँ धर्मके अर्थ त का लगाजाइथ कलसे पथरक मुरुतहन अभिन थारू समाजमन त माटीक न्वादरहन (ढ्याला) पूजा कर्ना हो। हमार समाजमन धर्मकर कैक कना धारणा प्रत्येक जहनके मन मस्तिष्कमन आखिरी दमतक फे नैंबिसरैना कैंक छाप परल बा। बडाभारी दुःखके बात त यी बा कि बडेबडे कुख्यात देश दुनियाँके प्रति घोर गद्दारी करुईया नेपालके लाग बीर सपुत जन्म देहुइया एक्थो सुकोमल फुला जसिन नेपाली चेलिन आपन जीवन संगीनी बनैम कैंक फुस्ला फुस्लाके भारतके बेश्यालयमन बिक्री कैंक आपन कथित ऐस आराम मौलिन हुइना घिनलक्तिक सपना देखुइया व जाके घोर आततार्इन फे धर्म कमाईक लाग पथरक मुरुतहन माटीक ढयालाहन रात दिन पूजा कर्थ, काफी धन खर्च कैंक तीर्थके नाउँसे चारधाम घुम जाइथ।

म्वार विचारमन का लागत कलसे मनैं असली धर्म तव प्राप्त कर सेकही जब नेपाली चेलिनके सम्मान कर सिखही। जब गास, वास, कपास नैंपाके रोग व शोकसे आकुल ब्याकुल होके दर्दनाक जीवन ब्यतित करुईया

मनैके लाग यी सक्कु चीजके व्यवस्था मिलैना कौनो विकल्पके खोज निकारक लाग ओपन औकात व बर्कतसे हिकहन सहयोग करही ।

हम्र धर्म मनुइया मनै हुई, हम्र रामहन मन्थी कृष्ण, भेंवाहन पूजा कैक हमन बास्तवम सुख नै मिलि, हिक आपन जमानाम अन्याय व अत्याचारके विरूद्धम लडाई करवेर कत्रा दुःख खैल । कत्रा मनै दुःखसे मुक्त करैल । हिकनक यी लाभकारी चरित्रके पूजा कर्लसे अर्थात मनम धइके अन्याय व अत्याचारके बिरूद्धम न्यायके पक्ष लेक आग बढलसे हमन सुख अवस्य एकना एकदिन मिली । रामफे आपन जमानाम आपन जनतन भोक, रोग व शोकसे मुक्त कराइल रलह । यी त जमानाके राम राज्य हुइलस । हम्र आधुनिक राम राज्यके स्थापना करपर्ना बा । जहाँ मानव जातिहन मानव जातिके शोषणके सदा सदाके लाग मुक्त कर जाई । जहां वर्गहित सुन्दर समाजके निर्माण हुई । पियासल मिर्गा पानीके खोजमन मरूभूमिमन दौरती रथ दौरती रथ । वस्तहँके हम्र फे सुखके खोजमन भटकती भटकती कहाँसे कहाँ पुगगैली । कुछ मनै दाङ्गसे, कुछ मनै अन्य पहाडी भेकमसे तराईके काला बञ्जारमन (घना जंगल) बाघ, भालु, हाथी व अन्य हिंस्रक जनावरके मुहम आके बैठली । बडेबडे घना ढड्ढी फाँडके मैदान कृषि योग्य भूमिहन परिणत करली त जे हमन पैल चुस दुःख दिह उह जाली आके राजधानीसे लालपुर्जा आन आनके हमन फोंक्या बनादेल । नजान हम्र कत्राकत्रा डरलक्ती किराकांटी सांप-बिच्छी व गोजरनसे डँस्वापाके काला वञ्जारहन कृषि योग्य भूमिमन परिवर्तन कर्ली । कत्रा मनै त मरफे गैल हम्र बांचल मनैनके फे उहक उह, पुरानक पुरान दर्दनाक स्थिति । जे हमहन कुकूरफे नै पैना दुःख दिहता वहिहन हम्र उल्ट मलिक्वा मानके नमस्कार कर्थी, सम्मान कर्थी, हिकनक संरक्षक अर्थात सामन्तबादके नाइके जेहिह हम्र बिष्णुके अवतार मानके, भगवान मानके वाकर भजन भज्थी; आब हम्र सोंचीकी हम्र कत्रा उल्टा मनई हुई । सदृभैल अस्हँके आपन दुस्मनके सेवा चाकरी कैक हमन सुख नै मिली । याकर बदला आव हम्र आपन मित्र व शत्रु झट्टहें चिन्ही । हिकनक सम्भाके बदलाम शत्रुभर जत्राबाट डेरा डन्डी कसाके हमार ठाउँसे भगाई नकि हमन दुःख देना वाकर काम बन्द कराई । सक्कु शोषित पीडित जनता न्यायके पक्ष लिहुइया व जाके देशभक्त सक्कुजान मिलके यी नेपाली धरतीम किसान, मजदूर व एकताम आधारित जनताके सरकार अर्थात नयाँ जनवादी सरकार लानी नंकि हमार और कौनो बिकल्प नै हो ।

"शहिद"

लेः— जे.पी.गोची बर्दीया

शहिद कह बेर ओइनक नाउँ बुझ जाइथ जे आपन समाजके, राष्ट्रके इज्जत जनतनके जायज न्यायपूर्ण माग मागबेर मुअल मनै हो / जौन काम कर्लक ओर्से ओइनक नाउँ इतिहासके हर-पन्नाम सोनक अक्षरसे लिखल रहथ /

आज हम्र किताब पढथी / ओहीम लिखल रथाकि हम्र न्यायक लागि लड्हीं परथ । हम्र फिल्म हेर्थी ओहीम हिरो-हिरोइन शोषक हुक्रनके विरुद्ध लडके ज्यान समेत देलक व न्याय पैलक देख्थी । त हम्र यी किताब केल पढके फिलम केल हेर्क नै हुई / हम्र फेन आपन समाजके हितके लागि जीउ ज्यान देना समेत तैयार हुईना चाही काकरकी जमंली कलसे एक दिन त मुअही पर्ना बा /

यदि हम्र यी पढल लिखल बुद्धिजीबी मनै कुछ फे कर नै सेकबी त के कैरी ? यदि कुछ कर नै सेकना हो त जीतीह मुअल जसिन हो / शहिद होक आपन नाम अमर कराई सेकना त भाग्यमानीके बात हो / उह कारणसे हम्र आपन समाज, देश जनतनके हित करक लाग जायज माग लेक आग बढना चाही-चाहे आवश्यक पर्लसे शहीद बन परी तबु फेन आग बढही परथ । दाङ्ग बेलवा वनजारीके गुमरा थारु, बर्दिया फचकहवाके मोहन चौधरी फेन शहिद हुई त अस्त शहिद और फेन बात /

"अनुरोध"

ले.– नरेश गोचाली (बर्दिया)

हमार देश नेपाल एक्थो कृषि प्रधान देश हो । यहाँके जनसंख्याके हिसावसे ९५% जनता कृषिम निर्भर वाट ओ गरीवीके रेखाम परल वाट, बाकी ५% जुन धनी बर्गम परल वाट हुँक्र सद्भर ९५% जनतन अन्याय अत्याचार कर्ती आइल वाट, यी एक्थो दुःखके बाट बा काकरकि ९५% जनतन ५% धनी सामन्ती हुँक्र कसिक दवाए सेकल ? ऐसिक ह्यार बेर सबसे कमजोरी त हमार एकता नैं हुईलक मार देखपरथ कलसे दोसर कमजोरी अशिक्षित हुइलक मार देख परथ, तेसर कमजोरी अभिनतक हमार समाजम रूढीवादी परम्परा चलती ऐंलक ओर्से देखपरथ । उह मार मैं गोचाली हुकनसे सबसे पहिल का अनुरोध कर चाहतुकि हम्र एकताम आग वढो आपन छाई छावा (लडका लडकी) सक्कुन स्कूल पढ पठाई व पुरान रूढीवादी परम्पराह हटाके लौव बैज्ञानिक परम्पराम आग वढी तव मात्र हम्र हमार गोचाली समाजह विकास कर सेक्बी व देशके महा सामन्त, शोषक हुकनसे छुटकारा पाए सेक्बी । यदी हम्र यी काम जवसम्म नैं कर्बी तब सम्म अस्त पशु सरह जीबन बिताए परी । हम्र सब देशके शोषित, पीडित, गरीब किसान व ज्यामी मजदुर ठाउँ-ठाउँम बडा-बडा महल कारखाना सडक व मसिन बनैंथी, अन्न फल फूल सक्कु हम्र उब्जैंथी, रात दिन नैं मानके हाथ ग्वारा कुहाख, घाम पानीह सहके सक्कु काम हम्र कर्थी । तभुन फेन हमार दाइ बाबा बुबा आजा व छाई–छावा हुँक्र सद्भर भुखल रह पर्ना, आँगम एक्थो भेगुवा गन्जी फे लगैंना मुस्किल पर्ना, एक अक्षर पढ नैं पाक अनपढ अज्ञानी हुई पर्ना अबस्था काकर आई परल बा ? काकर की हमार गाउँके जाली फटाहा , शोषक, सामन्त, साहु महाजन, भ्रष्ट, कर्मचारी समेत हमन सब गरीब दुखिन हर क्षेत्रम शोषण कर्ती ऐती बाट । कैयौं किसिमके जाल झेलम फँसाके, जाली तमसुक बनाके, चर्को ब्याज लेक, तिरोकर लेक आदि किसिम के नाजायज काम कर्ती ऐल बाट । उह मार हमन गरीब दुखिन आग बढना मौका नैं देल हुइत, हम्र गरीब दिन प्रति दिन गरीबके रेखाम

पर्ति गैल वाटी । हुकनके लरका स्वदेश तथा विदेशके वोडिङ्गम पढना, ऐस आराम‌म बैठना, मिठ खैना मजा लगैना सद्भर मोटर कारम घुमना जमिनम कब्भुफेन ग्वारा फें नैं परना हुइथिन । यी एक्थो दुःखके बात वा काकरकी जे सद्भर काम करथ उ मिठ खाए नैं पाइथ, मजा लगाए नैं पाइथ, एक अक्षर पढ नैं पाइथ, औषधि उपचार कर्ना पैंसा नैं पाइथ, दुःखम जीवन बिताए परथ । शोषक हुँक्र बरा बरा सभाम भाषण देती ऐंल वात, भोटके साहारासे गरीब के आंखीम छारो दार देलबाट, भ्रमम पर्लवाट लेकिन हमार जसिन गरीव दुःखीन के लाग कौनो किसिमके सुबिधा नैं हुइल देख परथ । खाली हमार आँखिम धुर दर्ना सिवाय कौनो काम नैं हुइथ, । हमन सब दिन धोखा देना काम कर्थ । देशभरके शोषक, सामन्त, पूँजीपति व बिदेशी दलाल सब जन हमन चुसक ठगक पल्कलबाट, हमार कमाही लुटना कामम सब जन एक जुट हुइथ । उ हमार सामन्ती सरकार फेन हिकन बहुत मद्दत करथ । हमार भलाई हुईना काम कब्भुफेन नैं करथ, अस्तक हमन आजकेल नैं होके हमार बाबा, बुबा, आजा पाजनके पालाम व ओहिसे पहिल फेन बहुत वर्षसे सतैंती आईलबाट । आज त अतरा बढी होगैल का वत्वाख साध्य नै हुईथ । आव फेन हम्र कौनो डगर नै खोज्वी, नै नेङ्बी त हम्र आपन जर्मलक ठाउँम, देशम बैंठ नै सेक्बी । उह मार हम्र आब कौन उपाय नैं कर्ना त ? की ओस्त मर जैना ? नाही हम्र ओस्त मुवल से त शोषक सामन्तीकें बिरुद्ध लरक मुना उचित देख परथ । काकरकि हम्र एक त जित्तीहम फेन मुवल सरह बाटी कलसे गरीव किसान, मजदूर, सबजान एकजुट होक शोषक बर्गनसे लड पर्ना बा । जव हम्र सबजान शोषित पीडित, गरीब दुःखी, एकजुट होक शोषक सामन्तीक बिरोधम लड्वी हुकन खतम पर्बी, प्रतिक्रियावादी सरकार ध्वस्त पर्बी, नौलो जनवादी सरकारके स्थापना कर्बी तब मात्र हम्र शोषक सामन्तसे मुक्त हुई सेक्बी । शोषक सामन्तसे मुक्त हुइना डगर का हो की नयाँ जनवादी क्रान्ति, कृषि क्रान्ति, जव हम्र कृषि क्रान्ति कर्बी तव हम्र सद्भर सुख शान्तिसे बैठ पैबी, आँगभर लगाए पैंबी, पेटभर खाए पैबी, आपन आपन लडकन पढकन मजासे शिक्षा दिह सेक्बी, औषधी उपचार मजासे कर पैंबी, स्वतन्त्र रुपम आपन जीवन बिताए पैंबी कना म्वार आशा वात । उहमार मैं आपन गोचालीनसे का अनुरोध कर चाहतु की हम्र आपन आपन गाउँ घरम संगठन बनाई, एकताम आघ बढी शोषक सामन्तके बिरुद्धम संघर्ष करी ओ आपन हक अधिकार लेक आग बढी कना अनुरोध बा ।

स्वागत गान

ले:-ललित कुमार गोविन्दपुर बर्दिया

स्वागत बा.... स्वागत बा हमार सक्कु संघरियन
हर जोतक खउइयन, पसिना बहाक बँचुइयन
संसारके पेट पलुइयन ... २
बल बा तोहार हाथम यो धरतीह उक्रैना
जांगर बा तोहॉर शरिरम उ पर्वत्वा फोरना
हिम्मत बा तोहार छातिम प्रकृतिसे जुझना
योजना तोहार सामान्य संसार ह पलना
समस्या तोहाँर कठिन बा एक प्याट एक आड बुझैना
तब्मु फे हाँस-हांस्क जिन्दगी बितादेना
घाम जार सह-सहक रात दिन काम कर सेक्ना
शक्ति तोहार अपार बा भरल गङ्गा फे बहादैना
लेकिन आपन अधिकारक लाग चिमाइल रहना

जनौवर कथा [कन्है]

संकलन:- रुपलाल चौधरी बर्दिया

१) फूला फूले गज फूल न फूला बसाए न भौंरा लोभाए । जानलेव का हो ?
२) कुकुर भुँके बहराइचमे कुकुरके पुछी बोर हाथमे । जानलेव का हो ?
३) धुटरू चिरैया बन वासु तरे भुतला उप्पर मासु । जानलेब का हो ?
३) औघट घाट गगर न बुरे, हाथी परसे महुँतिया भिजे, तरे बकुला प्यासे मरता । जानलेव का हो ?
५) उडे तो खनखनसे, बैठे पंख जोरके, सय जिव मारके खाए अक्को नाई । जानलेव का हो ?
६) मामारे मामा मैं गरल बाटु, दुर सस्सुर मैं टँगलबातु । जानलेव का हो ?
७) बोटलमे रस रसेमा अण्डा, जे नाई जानीते पांई दुइ डण्डा । जानलेव का हो ?
८) खुंटी पर खेतीकरे आपन खेतो जराके औरेक खेतीक साहारा । जानलेव का हो ?
९) दिनभर फटके खुदी न बुसी , जानलेव का हो ?
१०) तरे बाल उप्पर जर । जानलेव का हो ?

दुःख स्वयम अपनम निहित बा

ले.- जे. पी. गोची, बर्दिया

दुःख व सुख कना एक्थो लह्रियाके पहिया जैसिन हो कहना बात हम्र सक्कु जहन थाह बा । पहिलसे आजतक हम्र तमाम किसिमके दुःख पाइती । यी कारण का कलसे "दुःख आपन आत्माम निहित बा" । कसिक कलसे आजतक हम्र जौन शिक्षित वर्ग हुइती उ मनै आपन समाजह सिखाए नै सेक्थुईकी शोषक हुक्र हमन धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक ओ राजनीतिक आड लेक हमन तमाम दुःख दिहत । कारण का कलसे हम्र अशिक्षित ओ गन्जा बाटी । हमार समाजम एकता नै हो । उह कारणसे दुःख पाइती । त आव यी नै बनी हम्र सुख लन्ना उपाय करही परल ।

हम्र जत्रा गरीब, दुःखी, शोषित, पीडित जनता हुक एक जुत होक शोषक, सामन्ती हुकनके घोर बिरोध करी यदि हम्र थी काम कर नै सेकबी त दुःख सद्-सद् बढती रही । यी प्राकृतिके देन जसिन घाम, हावा पानी जसिन नै आई । उह कारणसे समय बुझक चल्ना परल बा । यदि यी समय नै बुझना हो कलसे समम कना कब्भुफे असिया नै लाग्त । यी दिन प्रतिदिन लगातार जैती रहथ उह कारणसे समय बुझक चल परल । हम्र घरके जत्रा लडका-लडकीवाट पढाइक परल । तब दोस्र अधिकार हक व कानुन कना का हो ? शोषक हुक्र हमार अधिकार हक कानुन कसिक हनन कैक शोषण कर्त कहना बात थाह हुई तब ओइनक घोर बिरोध हुई शोषक हुँक्र पाछ हटही । आज हमार साहित्य जगत पाछ पर्ना कारण उह हो / हम्र शोषक हुकनक फेला पर्लक ओर्से हम्र त थारु भाषाम आपन इतिहास, व्याकरण, गीत, कविता, कहानी, गजल, नाटक, उपन्यास, निवन्ध संवाद, मनोवाद; दैनिकी, हाँस्य व्यङ्ग्य ओ पत्रिका छपाई पैना हो । उह कारणसे हम्र यी जायज माग ही आग बढैहिक परि । उह कारणसे पहिल हम्र पढी-लिखी और हमार शिक्षित वर्ग हमार गरीब दुःखी, शोषित, पीडित जनतन बताई हमार सिद्धान्त ओ उद्देश्य का हो ? तब पक्कै हम्र एक जुट हुइबी और ओइनक घोर बिरोध कर्बी । औ जौन बुझल सुनल वर्ग जुन संघर्ष निरन्तर जारी करी । तब पक्कै जस्तक हमार हर पाईला धिर-धिर सफल हुइता उ एक दिन सफल हुई । जित चली ! चली ! चली ! संघर्ष जारी करी ।

कविता

"नै लर नै हुई"

लेः— टे.बी. गोची

गोचाली गोचाली भोख नाङ्गा जिन्दगी बितीगैल
कैह्या हुई गोचाली हमार घरबार !
गोचाली हो गरीबके पाला फेन आई
कैह्या आई गोचाली हो गरीबके सरकार !!
गोचाली हो गरीब सबकु एक जुट नै हुइत सम्म !
नै बनी गोचालो हो हमार घरबार !!
गोचाली हो सामन्तिनके शाषण नै फांकत सम्म !
नैं आई गोचाली हो गरीवनके सरकार !!
गोचाली हो काम करुइया किसान मजदूर खउइया जिम्दार !
महल बनुइया किसान मजदूर महलम बैठुइया साहुमहाजन !!
गोचाली हो किसान मजदूर एक मात्र परहिन जिम्दरुवन कर्रा !
किसान मजदूर एक जुट हुइबी मात्रपरहिन साहुमहाजनके कर्रा !!
गोचाली हो साहुके अन्न भकारी भर गरीव भर भुखल !

"सवालके जबाफ"

(दुई जान किसान एकथो ने०कां० समर्थक दोस्रा कम्युनिष्ट समर्थकके भेट घाट व सवाल जबाफ)

पहिलाः- तुहार बावा का बिचार मन परैथ हो गोची ?

(गोची संघारी)

दोस्रा:— कामनिष्ट तो कहथैं !

पहिला:- तुहांर बुड्ढ ? (बुबा- बाज्या)

दोस्रा:- बुढ्ढ तो कामनिष्ट !

पहिला:- तुहांर घरके भैया और गाउंके सब जाने ?

दोस्रा:- हुँकेहु सब जाने कामनिष्ट जानो ?

पहिला:- तुहीन के गाउँके सब जाने कामनिष्ट और तुँ ?

दोस्रा:- म हुँ तो कामनिष्ट ठीक लागत काझुन ?

पहिला:- तुहीनके दिमागमे सब गोबर भरगैल बाबै । आब काम नै लगबो कामनिष्टके दिमागमें गोबर केल रहथ ।

दोस्रा:- कामनिष्टके दिमागमें गोबर रहथ तो का ! बहुत ठीक हो । यी तो मजा बात हो । आहां ! कत्रा बह्रीया गोबरसे गोबर ग्यास बनत । गोवर ग्यास से त्रिजली निकरत / विजलीसे झका-झक अजरार हुईथ । बिजलीसे तमाम कारखाना चलत, रेडियो बजत, भात पकाइत, रेल गाडी मोटर चलत और धेर से काम करत उह औरसे आब तुहुँ फेन कामनिष्ट बन बो तो और ठीक रही ।

कन्हैक जवाफ

– रुपलाल चौधरी

बर्दिया

१) मुंजके फूला ।
२) हर वरिया ।
३) सेमरक बालम ।
४) सीत ।
५) सेउरवा (जाल) ।
६) मुरैं और भाँटा ।
७) पकनारी आँम ।
८) कुमाँढ । कुमहा
९) आखीक पल्का ।
१०) बदरक पुछी ।

समाचार

(१) गाउः- टंडवा
जिल्लाः- बांके, सुनार क्षेत्र
विषयः- किसानके महाजंसे टकराओं
समयः- १६ वर्ष पूरा हुइल ।
किसानः- टीकालाल थारु ।

महाजनसे (साहुसे) लेलक रु. २०००।- (दुई हजार) । समय समयम भुक्तान देल रू. ४१००।- हालसम्म तमसुक बाँकी देखैलक रू. २२०००।- (बाईस हजार) साहुँ असुनकर ऐती रहत । साहुके नाम लिख भूल गैल /

(२) गा० वि० स०ः- धधवार वार्ड नं० ८
गाउँः- फचकहवा वर घरान घर
जिल्लाः- वर्दिया
विषयः- अंश बण्डा
समयः- २०४८ साल आषाढ महिना

नाम चलल वर घर हंशरामके भैया -- आपन लाटी भौजी हन दिनके जवरजस्ती तानके उह्लारके और गाउँ लेगैल । लाटीक थरुवा पहिलेहे मुगैल वातीस तर उ चार विघाके हकदार वावैं । लाटीक लरका परका नैं हुइतीस उह वर्से बलजफती जन्नी बनैम तब चार विघा खाए पैम कैक भौजी उह्लारल समाचार बावैं ।

(लाटी जातिसे लाट बा)

(३) वहुदलीय प्रजातन्त्रके घोषणा हुइना साथ वर्दिया जिल्लाके तमाम फाँटाम सुकुमवासी बैठना शुरु कर्ल । राजनैतिक नेता हुँक जग्गा देना आश्वासन देक भोट मङ्गल लेकिन अभिनसम्म जग्गा नैं पैलक वर्से सुकुमवासी हुँक अलपत्तम परल बात- अस्त भोटके लाग सुकुमबासीन जग्गा देना लालच देखैना काम वर्दिया जिल्लाम २०३६ साल फेन हुइलक हो तर पाछ घर छाप्रो जराके खदेरलह ।

क० नेत्रलाल पौडेल[अभागी]हमार हृदयम सद्द वचल रहही

चीनके प्राचीन लेखक समा छ्चेन लिख्थ मृत्युसे हमन समान रूपसे सामना कर परथ / लेकिन कौनो मनैनके मृत्यु थाए शान पर्वत्सेफे बढी गम्हीर रहथ कलसे केको मृत्यु पखनासेफे हलुक रहथ ।' जनताके हितके लाग ज्यान देनो मनैनके मृत्यु थाए शान पर्वत्वसे फे बढो गम्हीर रहथ कलसे फासिष्ट हुकहन काममं मद्दत कर्ना ओ शोषित तथा उत्पीडित मनैनह दबैना मनैनके मृत्यु परवत्वसे फे हलुक रहथ । कमरेड नेत्रलाल पौडेल आपन परिवार तथा घरवारह वास्ता नैं केंख सद्द शोषित-पीडित मनैनके मुक्तिके लाग लडती-लडती ज्यान देहलवर्से वहाक मृत्युह हम्र बहुत गम्हीर तथा गौरवशाली सम्झल वाटी । अभिन फुरसे कना हो कलसे उहांत थारू भाषा तथा साहित्यके उत्थान करक लाग तथा थारू भाषम सर्वप्रथम प्रगतिशील 'गोचाली' पत्रिकाह प्रकाशन करक लाग, 'गोचाली परिवारह' गठन करकलाग हमन आर्थिक तथा मानसिक रूपम सहयोग करलम ऊहाँप्रति हमार परिवार सद्द ऋणी रहने वा । उहाँह हम्र आपन परिवार भित्तारके सदस्य सम्झथी । आंज हुकाहार अभाव हमन बहुत खलल वा । हमार विचम उहाँ नैं रहलसेफे उहाँ हमार हृदयम सद्द बच्चल बाट और सद्द बच्चल रहही काकरकी उहांक मृत्यु हिमालय पर्वत्वसेफे बढी गम्हीर वा / हुकाहार सम्झनाम हमार परिवार छोटकरिम हुकाहांर जीवनोह श्रद्धाके रूपम प्रकाशन करटा जेहिसे हुकाहार मीलनसार, शुभचिन्तक, सहयोगी ओ क्रान्तिकारी जीवन चरित्रके सम्झना हमार बिचम अमर रह स्याक /

संसारम दुई किसिमके मनैं रहथ । एकथोर डर छेरुवा मनैं जौन मनैं बिपत पर्लसे रुइथकेल । दोस्रा बीर मनैं जौन मनैं आपन सामाजिक तथा प्राकृतिक बाधा ओ बिपत्तिके बिरुद्धके संघर्ष कर्ति अग्घ बढथ / क० नेत्रलाल 'अभागी' दोस्रो प्रकारके मनैं हुइट । उहाँ सद्द सामाजिक ओ प्राकृतिक शत्रु विरोधी महान संघर्षम जुटल रहल । नेपाली जनताके मुक्तिके काममं सद्द डट्ल रलह । हमार समाजम आम जनताम हुइति रहलक

स्वदेशी तथा विदेशी शोषण, अन्याय अत्याचार, दमन ओ उत्पीडनह अन्त्य करक लाग, एकथो स्वतन्त्र, मुक्त ओ धनि नेपालह बनाइक लाग मनैंन उरर मनैंनसे हुइती रहलक शोषण ओ अत्याचारह खतम कैख जनताके सुग्घर भविष्यह निर्माण करक लाग बहुत नम्मा समयसे संघर्ष कर्ति रहलहं । वह पवित्र सपनाह पुरा करकलाग गठन हुइल हमार पार्टी प्रतिबन्धी नेपाल कम्युनिष्ट पार्टीम २०२३ सालसे सक्रिय रूपसे भागलेति ऐन। पहिल ने० क०पा० (चौ०म०), के डी०ओ०सी० म रहक काम समेत कर्ल पाछ जिल्ला कमिटीम तीव्र अन्तरविरोध हुइलवर्से उहाँ प्र०ने०क०पा० (मा०ले०) म प्रवेश कर्ल । २०३७ सालम हुकाहार अगुवाइम प्र०ने०क०पा० (मा०ले) के 'सुदुर पश्चिमाञ्चल क्षेत्रीय सङ्गठन कमिटी के गठन हुइल। क० नेत्र-लाल 'अभागी' उ कमिटीके सचिव रहक सज्ज क्षेत्रभर पार्टी लाइन, नीति ओ सिद्धान्तह लागु कर्ना कमम तन, मन, धन देक लग्लरलह । असिक क० नेत्र एकथोर जिम्मेवार क्रान्तिकारी कम्युनिष्ट ओ प्र०ने०क०पा० (माले) के एकथोर वरिष्ट नेताके हिसाबसे नेपाली जनवादी क्रान्तिह आग्घ बढाए-भरम्ग्दूर प्रयत्न चलैल रलह । वहासे उहाँ यी क्षेत्रके बीर योद्धा रलह। जनताके लाग लडना बीर सेनानी रलह ।

क. नेत्रलाल पौडेलके जन्म २००१ साल दाङ धर्ना गाउँम एकथोर निम्न मध्यम बर्गीय परिबारम खासकैंक ब्राह्मण पुरोहित परिवारम हुइल रलहन । हुकाहार बाबक नाऊँ मोहनलाल पौडेल (उपाध्याय) रलहिन । हुकाहार दुईथोर जन्नीनमसे क. नेत्र छोटकी जयन्ती पौडेल ओरके नौं सन्तान (३ छावा, ६ छाई) मसे छोटकी छावा रलह । उहांके बाल्यकालफे बहुत कष्टसे बितल रह । उहां २०२२ सालम काठमाण्डौंसे बी.ए. पास करल रलह । सर्वप्रथम उहां २०२३ सालम पश्चिम नेपालके जनज्योती मा.बि. अर्घाखांचीम शिक्षक पदम नियुक्त हुइल रलह । २०२४ सालओर दाङ नारायणपुर स्थित सिद्धरत्न प्रा. वि. म प्रधानाध्यापक पदम नियुक्त होक कामकर भिर्ल । पाछ स्थानीय जनताके सहयोगसें यी स्कूलह मा. वि. म परिणत कर्ल । २०२३ सालसे २०३० सालम यह बिद्यालयके अध्यापन कार्य कैल वर्से सबकुज हुकहिन मास्टर शाहाबके नाउसे जन्थ। २०२९/३० साल ओर बनारससे प्रकाशन हुइन 'सन्देश' पत्रिकाम तत्कालीन नयाँ शिक्षा योजनाके विरोध तथा हँची मिहह बघाई देक दुइथोर कबिता छपाईल वर्से ओ तत्का-लिन जिल्ला शिक्षा अधिकारीके मनोमानी ओ भ्रष्टाचारके घोर विरोध ओ

भण्डाफोर और सरकारी प्रतिक्रियावादी नीतिके लगातार विरोध करल वर्से उहा स्थानीय प्रशासनके आँखके किच्चर बनसेकल रलह । पञ्चायती निरङ्कुश प्रशासक हुक हुकहीन एकथोर खतरनाक व्यक्तिके रुपम हेर दल्ल । फल-स्वरुप स्थानीय ओ जील्लाके प्रतिक्रियावादी हुकहनक मिलीमतोम क. नेत्र शिक्षक पदके जागीरसे खोसुवा पैत ओ हुकाहार नाउँम वारेण्टफे कटलन । यी अवस्थाम प्रतिक्रियावादी हुकहनक कब्जाम पर्क आपन महान यात्राह कुण्ठित कराइलसे आपन जीवनह बहुसंख्यक जनताके मुक्ति ओ नयाँ समाज निर्माणके लाग लगैनाम आपन महान काम हुइने बा कैख ऊ भूमिगत जीवन वितै-नाम आपन अन्तिम निर्णय लेल । परिणाम स्वरुप, २०३० साल साउन २५ गते क. नेत्र भूमिगत होक जनताके माझम क्रान्तिकारी कामह आग्घ बढाए दल्ल / ओ जीवनके अन्तिम समयसम प्रतिक्रियावादी दमनह चिर्ती कष्टपूर्ण जीवनम रहक भूमिगत जीवन बिताई लग्ल ।

हुकाहार भूमिगत जीबन बहुत कष्टपूर्ण रलहन । किसान-गरीब, दु:खीके घर हुकाहार सेल्टर रलहन । दाङके किसानहुक हुकहीन आपन बहुत लग्घुक हितैषी सम्झत, आपन एकक घरक परिवार सक् सम्झत । दाङके प्रख्यात कर्जाही काण्ड हुकाहार नेतृत्वम हुइलक काण्ड हो । सरकार हुकहीन पक्रनाम मद्दत कर्ना मनैंनह २५,००० पुरूस्कार देना घोषणा करल रह । सरकार सेनासे गाउँ गाउँ अपरेशन कराक पकरैना जुक्टी करलरह लेकिन दाङके किसान हुक आपन प्राणसे फे मैगर आपन नेताह सरकारके हाथम जाई नै देल । सद् आपन कोण्टी-कोण्टीम नुकाख धर्ल । अस्तहक ऊ आपन भूमिगत जीबन २०३० से २०४१ सालसम वितल ।

क० नेत्रके स्वास्थ्य करीब एक दशकसम भूमिगत जीवन बिताइल वर्से वस्तहके हुकाहार शरीर शिथल बन्ती गैल रलहीन । २०४० सालके मंशिर पुससे वहांम उच्च रक्तचापके बिमारी समेत देखा परल रह । एक पयारा वहाँ देशके कौनो पर्वतक क्षेत्रसे नेङ्गबेर २०४० के फगुनके दोस्रा हप्ता ओर अचानक मुर्छित हुइल रलह । वथेहसे पार्टी वहांह विशेष निर्दे-शनके साथ उपचार करैना जिम्मा देहल रह। २०४१ जेठ २ गते स्थानीय कमरेड हुकनसे विदा होक बुटवल ओहर मिटीडम भाग लेहकलाग दाङसे नेङ्गल । आपन शारिरीक स्थितिके कौनो वास्ता नै कैख क्रान्तिकारी कामम लग्ना बानी रहल वर्से कामरेड हुकहनक आग्रह रहती रहती फे वहां संघ-रीया नै लेक नेङ्गल । उहाँ ४ गते एकथोर आपन नातेदारके घर रात बैठ

गैल । ऊ समयम ऊ बहुत बिमार रलह । ४ गते दिन भर रात भर वहँ घरम सुत्ल । ५ गते विहान्नीए वहाँसे पुग पर्ना ठाउँ ओर आग्घ बढल एक्थोर प्रगतिशील परिवारम पुग्क अप्नहे खाना पकैल और ऊ परिवारके बच्चनहफे खवाक वहाँसे नेङ्गल । ५ गते रातसम और आश्रय स्थलम पुग सेक्ना कैक ऊ घरसे विदालेक उहाँ नेङ्गल । उँहा थोरचे हलि पुग्ना हिसाबसे सड्क डगरसे तनिक छोटकरी डबर पकरक नेङ्गल । लेकिन वहाँ जत्रा-जत्रा आग्घ वढत वत्रह-वत्रह सिकिस्त हुइती जाइत । शारिरीक शिथिलता बढती गैलन और सम्भवत: हुकाहार नेङ्गना गतिफे बन्द हो गैलन। फलस्वरुप वहाँ निश्चित समय अवधिम आश्रय स्थलम पुग नै सेकत। जेष्ठ ५ गतेके रात झन झन गाहिर हुइती जाइतह । क० नेत्र लरखरैती आग्घ बढतलह । आखिर राप्ती अञ्चलके दाङ्ग जिल्ला अन्तरगत थकरी कोटके फेदीम, चैलाही गा०वि०स० के लग्घु सुका खोल्हवांके आरीम आ पुगवेर उहांके रक्तचाप अकस्मात तेज हुईल, थकित ओ कमजोर शरिरम वडा झट्का (डा० के अनुमान अनुसार उंहाम ऊ ब्याला *Anaphylotic shock*) पर स्याकथ, जौन मृत्युके कारण वन स्याकथ) परल, डग्रीम अचेत होक लरल और आखिरम २०४१ साल जेष्ठ ६ गते विहानके रात्क नेपाली सर्वहारा वर्गके एवथोर कर्मठ योद्धा कमरेड नेत्रलाल पौडेलके अचानक हृदयगति बन्द होक अत्यन्त असामयिक और दुःखद निधन ह्वाए गैल । मुअल एकिन प्रमाणके आधारम ने० क० पा० (मा०ले०) पार्टी उँहाके अवशेष (सज्ज खप्पर) ह पौष १२ गते सर्वहारा वर्गीय क्रान्तिकारी सम्मानके साथ विसर्जन करल ओ हार्दिक तथा भावपूर्ण श्रद्धाञ्जली अर्पण करल । आज, ढील हुइलसेफे हम्र सम्पूर्ण "गोचाली परिवार" उँहाके दुखद निधनम उँहाप्रति हार्दिक तथा भावपूर्ण श्रद्धाञ्जली अर्पण करती । क० नेत्र आपन जीवन भर नेपाली जनताके चलाइल वर्गीय तथा राष्ट्रिय सङ्घर्षंह आग्घ बढैना कामम लग्ल रहल यह हुकाहार महानता हो ।

उँहा जनबादी साहित्यकारफे रलह । २०१५ सालसे कविता, मुक्तक और गीतके क्षेत्रम कलम चलाए भिरल। क० नेत्र २० के दशकसम स्तरीय रचना देह भिर स्याकल रलह । २०१५ सालसे देखा परल उँहाके विद्रोही कवि भावना, विचार और व्यवहारसँग संग बिकसित हुइल नेपाली प्रगतिशील साहित्यकारके एक्थोर चम्कल टोरैया वन पुग्ल । ३० ओ ४० के दशकम उहाँ बहुत महत्वपूर्ण साहित्य रचनाके शृजना कर्लं। कविता, लेख, वाल

साहित्य, काव्य औंर गित उहांके कलम चलना प्रमुख बिधा हो। पिछरल भाषा तथा साहित्यके उत्थानकेलागि उहाँ सद् प्रयत्नशील रलह । पिछडल थारू भाषा तथा साहित्यके विकासम उँहाके विशेष अभिरुची रह । उहा थारू भाषम फुटकर रचनाफे लिखत ओ और भाषा साहित्यसे थारू भाषम रचनाके भाषानुवादफे करत । 'सतिसाल मात्र ठिग उभिन सक्छ' उहांके प्रकाशित कविता संग्रह हो /

क० नेत्र आब हमारथे नै हुइत लेकिन हुकार दयालु और मायालु फोटो हमार हृदयम अभिनसम बच्ल बाट / यी संसारम हुकाहार शरीर नैरलसेफे हुकाहार प्रेरणा और सहयोगसे जीएल गोचाली अभिनसम हमार बिचम बच्ल बाट / उहांके अमर कृति और योगदानफे हमार बिचम रहल बाट औंर बडा-बडा दुःख कष्ट सहक सद्ध आग्घ बढना प्रेरणा हमन देहती बात /और देहती रही ।

२०४८/७/२६

गोचाली परिवार
पश्चिमाञ्चल
नेपाल

जिन्दगी के डगर

-महेश चौधरी
दाङ बैवाङ

जिन्दगीके डगर नम्मा बा गोची,
जीन डट्करो आव्ब हे ।।
एक चोट पैलक जिन्दगी हो हमार,
काम कैक जैना बा
हिलाम जरमल कमलसक हमन,
हाँसर क जिना वा ।।१।।

जिन्दगीके डगर — — आव्हे ।
डगर हमार घनघोर बा गोची,
फर्ना वा मज्जासे ।
बाँध-भालके डर भाग नै परत,
मिलक रलसे ॥२॥
जिन्दगीक डगर — आव्हे ।
धैर्य ओ साहस लेहक हम्र,
चलबी जहासे ।
बाँध-भालसे लर्क रहबी हम्र,
जियबी सुखसे ॥३॥
जिन्दगके डगर — आव्हे ।
चाहे चल आँधी, चाहे वर्ष पानी,
गुलाफ सक हस्ना वा ।
चाहे पर हिउँ चाहे खस पथरा,
डांफेसक नचना बा ॥४॥
जिन्दगी के डगर — आव्हे ।
हिमालसे उप्पर उठना बा हमन,
धैर्य ओ साहसले ।
बाँध-भालसे लर्क जिना बा हमन,
सक्कुज खुशीसे ॥५॥

जिन्दगी के डगर — — आव्हे ।
चाहे चल लाठी, चाहे छुट गोली,
जनमुक्तीके डगरम ।
चाहे पट्क तोप चाहे दागत बम,
— देश मुक्तीके डगरम ॥६॥
जिन्दगीके डगर — आव्हे ।
चोलो-चोलो बाबु, चोलो-चोलो भैया,
शहीद त बलाइत ।
नेङ्गो-नेङ्गो दिदी-नेङ्गो-नेङ्गो दादु ।
गुम्रा त असीयाइत ॥७॥
जिन्दगीके डगर — — आव्हे ।

लिहपरल अछिन्क अधिकार

मङ्गल प्रसाद चौधरी दाङ उत्तर अमराई

कर्नासंम करल पञ्चायत, बहुत दुःख दिहल,
चुस्नासम्म चुसल हमन, आधा प्राण लिहल ॥
उठी गोचाली, कथ्याक हुइल अत्याचार,
लिह परल अछिन्क, अधिकार २॥
अनेक करल अत्याचार, निमुखा दाशन,
अम्हीफेवां नेपालम, दानवी शासन ॥
उठी गोचाली, कथ्याक हुइल अत्याचार,
लिह परल अछिन्क अधिकार २ ॥
तानाशाही पञ्चे कालम, सामन्ती संस्कार,
स्वदेशी धन बिदेस पुगाइल, श्री ५ सरकार ॥
उठी गोचाली, कथ्याक हुइल अत्याचार,
लिह परल अछिन्क, अधिकार २ ॥
देश नङ्गा जनता कङ्गाल, विश्वम महिला धनी रानी,
एशीयाली मापदण्डम् पुग्ना, रज्वक महावाणी ॥
उठी गोचाली, कथ्याक हुइल अत्याचार,
लिह परल, अछिन्क, अधिकार २ ॥
अन्याय अत्याचार सहर्नै सेक्क, नेपाली जनता उठल,
पञ्चायती व्यवस्था खतम कैक, बहुदल व्यवस्था अन्ल ॥
उठी गोचाली, अथ्याक हुइल अत्याचार,
लिह परल अछिन्क, अधिकार २ ॥
बहुदल आइलत का का हुइता, सक्कु जनता बुझ्ना वा,
कांग्रेस सरकार नेपालह, बेच्ना जुक्ती कटी बा ॥
उठी गोचाली, कथ्याक हुइल अत्याचार,
लिह परल अछिन्क, अधिकार २ ॥
कभु कथा लदया साझा, कभु शैनिक शासन,
शोषण दमन अत्याचार कर्ता, निमुखा दाशन ॥
उठी गोचाली, कथ्याक हुइल अत्याचार,
लिह परल अछिन्क, अधिकार २ ॥
किसान मजदूर एक जुट होक, संघर्ष झट्ट कर्ना,
सामन्ती सरकार खतम कैक, नौव जनवाद लन्ना ॥
उठी गोचाली, कथ्याक हुइल अत्याचार,
लिह परल अछिन्क, अधिकार २ ।

शुभ-कामनाका केही शब्द

यस पत्रिकाका पूर्व सम्पादक महेश चौधरी, सगुनलाल चौधरी र भगवती चौधरीको जागरूकता एवं तत्परताले थारू भाषा र साहित्यको बिकास गर्न २०२८ सालमा गोचालीको जन्म भएको हो । बीचमा अनेक ब्यवधान परे पनि अहिलेसम्म यो पत्रिका झल्याक झुलुक देखिनु यहाँका थारु जातिका शिक्षित युवा समुदायको भगीरथ प्रयत्न हो जस्तो लाग्छ /

आफ्नो जाति, भाषा र संस्कृतिप्रति स्वाभिमान र गुरुताको बोध भएन भने त्यस समाजको उन्नति हुन न सक्ने कुरा सर्वविदित छ / नदीहरू समुद्रमा रुपान्तरित भए झैं नेपालका सबै भाषा, साहित्य र संस्कृति एवं राष्ट्रबोध गर्नमा गोचालीको योगदान रहोस् यही मेरो शुभ-कामना छ ।

यस पत्रिकाका संपादक सगुन लालजीले मलाई नेत्रलालजीको बारेमा केही लेख्न आग्रह गर्नु भएको थियो / पुरानो स्नेहले अनकनाए पनि ठाडै नाई भन्न सकेको थिएन / नेत्रलाल अभागी भूमिगत जीवनमा निकै उत्कर्षको सिढीमा चढ्नु भयो मेरो खुला जीवनले उहाँलाई पछ्याउन सकेन / उहाँ मालेको संस्थापक सदस्य मध्ये एक हुनुहुन्थ्यो / 'वर्गशत्रु खत्तम गर्ने' त्यो राजनीतिक पकडको बेला हामी जस्ता आफूलाई प्रगतिशील मान्ने ब्यक्ति टिक्न गाह्रो थियो / त्यस बेला उहाँको आलोचनाको तारो म पनि [illegible]

अपशोच आज उहाँ रहनु भएन नत्र शायद [illegible] उहाँले पनि आज खुला राजनीतिक जीवन बिताउन [illegible]को भए कस्तो हुन्थ्यो त्यो मेरो लागि अतृप्त धोको नै [illegible] आफूलाई अभागी भने पनि शोषित उत्पडित वर्गलाई [illegible] काममा अत्यन्तै निष्ठावान् रहनु भयो त्यो मलाई भन्दा [illegible]तिक मित्रहरुलाई बढी थाहा होला / यस भन्दा बढी कुरा लेखेर राजनीतिक विवादमा पर्ने मेरो इच्छा छैन र त्यसबाट कसैलाइ लाभ पनि छैन /

चेतना अथवा सूझबुझ रहेन भने आफ्नो शत्रु आफैं होइन्छ / त्यसैले आफू, समाज र संसार बुझ्नु प्रत्येक ब्यक्तिको पहिलो कर्तव्य हो अनि अर्कालाई बुझाउनु दोस्रो कर्तव्य हो । पछि परेको थारू जातिको उत्थानमा केही वर्ष थारूहरूसंगै सक्रिय राजनीतिक जीवन बिताएको हुँ । पेशाले पत्रकारिता अङ्गाले पनि हाम्रा समाजमा ब्याप्त शोषण, दोहन र पछौटेपनको बिरुद्ध मेरो कलम चल्ने छ । गोचाली परिवारप्रति यही मेरो प्रतिवद्धता हो / तपाईहरु चेतनाको ज्योति सल्काई राख्नोस् / अन्धकार बिरुद्ध प्रकाशको बिजयको अभियान अजरामर छ /

– नारायण प्रसाद शर्मा
सम्पादक–'नयाँ युगबोध'सा. दाङ